Class:	**B.A. 1 year**	**Subject:**	**Music (Vocal/Instrumental)**
Course Type:	**DSC 1**	**Course Code:**	**MUSA101TH**
Course Name:	**Theroy**	**Paper Type:**	**Theory Paper I**

MUSIC
(Theory)

Lesson : 1 - 13

Dr. Nirmal Singh

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय सूची	पृ. सं
1		विषय सूची	2
2		प्राक्कथन	3
3		पाठ्यक्रम	4
4	इकाई 1	आमिर खाँ और उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ	5-16
5	इकाई 2	रागों की जातियाँ	17-29
6	इकाई 3	तीन ताल और दादरा ताल	30-39
7	इकाई 4	सप्तक और आरोह अवरोह व पकड़	40-50
8	इकाई 5	लय और वर्ण	51-60
9	इकाई 6	सितार	61-71
10	इकाई 7	तानपूरा	72-81
11	इकाई 8	नाद	82-91
12	इकाई 9	हारमोनियम	92-100
13	इकाई10	तबला	101-110
14	इकाई 11	उस्ताद जाकिर हुसैन और तानसेन	111-121
15	इकाई 12	संगीत और स्वर	122-133
16	इकाई 13	अल्हैया बिलावल, भैरव और काफी राग	134 -144
17		महत्त्वपूर्ण प्रश्न- कार्यभार	145

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA101H में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की सैद्धान्तिक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई । में आमिर खाँ और उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ के जीवन परिचय आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 2 में रागों की जातियाँ आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 3 में तीन ताल और दादरा ताल आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 4 में सप्तक और आरोह अवरोह व पकड़ आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 5 में लय और वर्ण आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 6 में सितार का वर्णन किया गया है।

इकाई 7 में तानपूरा वाद्य का वर्णन किया गया है।

इकाई 8 में नाद विषय का वर्णन किया गया है।

इकाई 9 में हारमोनियम वाद्य यंत्र का वर्णन किया गया है।

इकाई 10 में तबला वाद्य यंत्र का वर्णन किया गया है।

इकाई 11 में उस्ताद जाकिर हुसैन और तानसेन के जीवन परिचय का वर्णन किया गया है।

इकाई 12 में संगीत और स्वर आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 13 में अल्हैया बिलावल, भैरव और काफी राग वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

COURSE CODE MUSA101TH

B.A.1st Year

Layout & Course of Study

HINDUSTANI MUSIC (Vocal & Instrumental)

3 Lectures /week

Duration	Paper-I Theory (Unit-I)	Max Marks	Credits
3 hours.		50(35+15Assesment)	3

Title-Basic Principals of Indian Music & Biographies of Musicians, Composers & Musicologists.

There will be three sections, candidates shall have to answer one question from each section & two from any of the three sections, thus five questions in all.

SECTION-I

1. Definition of the following terms:- Swara, Sangeet, Saptak, Laya, Rãga, Varna

2. Study of the following:-

a. Jatis of RagaAudav – Shadav – Sampuran

b. Nãd – Nãd ki Jati – Tarta, Tivrata, Gun

c. Ãroha, Avroha, Pakad.

3. Basic knowledge of the following instruments:- Tãnpura, Sitar, Tabla, Harmonium

SECTION-II

Biographies & Contributions of the followingTansen, Ustad Shahid Parvez, Ustad Zakir Husain, Ustad Amir Khan (Vocal)

SECTION-III

Study of prescribed Rãgas&Tãlas

Rãga – Alhaiya Bilawal, Kafi, Bhairav

Tãla – Teentãl, Dadra

इकाई-1
आमिर खाँ और उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ

इकाई की रूपरेखा

1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य
1.3	आमिर खाँ जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	उस्ताद शाहिद परवेज जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
1.5	सारांश
1.6	शब्दावली
1.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.8	संदर्भ
1.9	अनुशंसित पठन
1.10	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह पहली इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, आमिर खाँ और उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ का जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

संसार की कोई भी विधा/संगीत क्यों न हो, जाब तक उसका इतिहास न जाना जाए, उस संगीत को जड़ से जानना असंभव सा प्रतीत होता है। इसी प्रकार संगीत की बारीकियों को समझने के लिए संगीत से जुड़े उन महान संगीतज्ञों के बारे मे अध्ययन करना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जिन्होंने अपना सर्वस्व संगीत के लिए न्योछावर कर दिया। उन महान संगीत गुनीजनों के जीवन का गूढ़ता से अध्ययन किया जाता है और उनके समय मे संगीत की स्थिति का और उनके द्वारा किए गए संगीत के उत्थान का अध्ययन किया जाता है। इन गुनीजनों के द्वारा रचित रचनाओं लेखों और रागों के अध्ययन से संगीत विषय मे निपुणता प्राप्त की जा सकती है। उन्हीं महान संगीतज्ञों मे से आमिर खाँ और उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ भी हैं। इनके जीवन का अध्ययन किसी भी संगीतज्ञ के लिए बहुत आवश्यक है। इनके जीवन परिचय से, इनके संगीत के प्रति समर्पण से कोई भी प्रेरित हुए बिना नहीं रह सकता अर्थात अनायास कि प्रेरित हो जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी आमिर खाँ और उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ के जीवन परिचय का विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे और इनके द्वारा सांगीतिक योगदान का अध्ययन कर प्रेरणा पा सकते हैं।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- आमिर खाँ के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।
- आमिर के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- आमिर खाँ के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- आमिर खाँ के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।
- उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।

- उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल आमिर खाँ और उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ के जीवन परिचय का अध्ययन कर परएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन और सांगीतिक यात्रा मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

1.3 अमीर खाँ

किराना घराने के आधुनिक प्रतिनिधि उस्ताद अमीर खाँ से प्रत्येक संगीत प्रेमी परिचित है। बैजू बावरा और झनक झनक पायल बाजे चलचित्रों में पार्श्व संगीत गाने से वे साधारण श्रोता के भी प्रिय हो गये। उस्ताद अमीर खाँ का विचार था कि चलचित्र द्वारा शास्त्रीय संगीत का यथेष्ट प्रचार हो सकता है। इसलिये उन्होंने किसी भी चल- चित्र में गाने का सुअवसर नहीं छोड़ा।

खाँ साहब अमीरखाँ का जन्म सन् 1912 अप्रैल माह में अकोला में हुआ। आपके पिता स्व० शाहमीर खाँ एक अच्छे सारंगो वादक थे जिन्होंने बम्बई में रहकर सारंगी सीखा, किन्तु बाद में इन्दौर में रहने लगे। उस समय इन्दौर में चोटी के कलाकार रहते थे। उनके मकान पर अलाबन्दे जाफरुद्दीन खाँ, बिन्दू खाँ. मुरादखाँ आदि ऐसे संगीतज्ञ अक्सर ही आया करते थे और संगीत की चर्चा हुआ करती थी। उस समय यद्यपि कि अमीर खाँ बहुत छोटे थे, किन्तु उन पर उस वातावरण का प्रभाव पड़ता ही था। हर शुक्रवार को उनके यहाँ संगीत का एक अच्छा जलसा हुआ करता था। उसमें मुरादखाँ बोनकार, वहीदखाँ और रज्जव अलीखाँ हमेशा भाग लेते थे। इप सांगीतिक वातावरण का अमिट प्रभाव अमीर खाँ पर पड़ा ।

शाहमीर खाँ ने प्रारम्भ में अमीर खो को सारंगी बजाना सिखाया और कुछ दिनों तक वे सारंगी बजाते भी रहे। सारंगी छोड़ने और गायन शुरू करने के पीछे एक विशेष घटना है जो इस प्रकार है। शाहमीर खाँ के शिष्यों में एक शिष्य बहुत घमण्डी हो गया था। उसके लिये उनके पिता ने एक उक्ति निकाती। अमीर खाँ को गायन सिखाना शुरू किया और विभिन्न प्रकार के कठिन पलटे सिखाकर उनके कंठ में बैठा दिया

इस बात को शाहमोर खाँ ने बड़ा गुप्त रखा। २-३ वर्षों के बाद एक जलसे में उसी-शिष्य ने सारंगी का प्रदर्शन दिया। इसी के बाद एका साहब ने अमीर खाँ को गायन के लिये बैठा दिया। ११-१२ साल के छोटे बच्चे को रंगमंच पर देखकर जनता ने करताल ध्वनि की। अमीर खाँ ने गायन शुरू किया । जब वे कठिन सरगम लेने लगे तो उसका हाथ थक गया और वह पसीने-पसीने हो गया। उपस्थित श्रोताओं ने भी उनके सुरीले और मधुर शैली की बहुत प्रशंसा की। उस दिन से अमीर खाँ ने सारंगी बजाना हमेशा के लिये छोड़ दिया और गायन का अभ्यास करने लगे। शाहमीर खाँ ने अमीर खाँ के गले में मेरुखंड की तानें अच्छी प्रकार बैठा दी थी।

इन्दौर के बाद वे 5-6 वर्षों के लिये बम्बई आ गये। वहाँ एक महफिल में उनकी मुलाकात अब्दुल वहीद खाँ से हुई। अमीर खां का गायन सुनकर उन्होंने दवे मन से उनकी प्रशंसा की और कहा, अच्छा गाते हो, किंतु अभी भी तुमको मेहनत करनी चाहिये । उनकी ये बातें अमीर खाँ को अच्छी नहीं लगीं। उन्होंने अब्दुल वहीद खाँ की ही गायकी पर अभ्यास करने और उनसे हार्दिक प्रशंसा लेने का दृढ़ संकल्प किया। कुछ दिनों के बाद उन्होंने अपनी इच्छा पूरी भी की। अब्दुल वहीद खाँ को यह कहना ही पड़ा कि मुझे अब पूर्ण विश्वास हो गया है कि मेरे घराने की गायकी को अमीर खाँ ही जिन्दा रक्खगे । दिल्ली में कुछ दिनों तक रहने के बाद एक बंगाली सज्जन के साथ कल- कत्ता चले गये। वहाँ लोगों ने आपका गायन बहुत पसन्द किया। अमीर खां ने अपना पहला आकाशवाणी कार्यक्रम कलकत्ता से ही प्रसारित किया । तब से आप देश के प्रत्येक आकाशवाणी केन्द्र से अपना कार्यक्रम प्रसारित करते रहे और सभी उच्च संगीत सम्मेलनों में बार निमन्त्रित किये जाते रहे। लगभग 6 वर्षों तक कलकत्ता में रहने के बाद बम्बई में स्थाई रूप से रहने लगे

अमीर खा की गायन-शैली अथाह सागर सी गम्भीर होते हुये भी मधुर थी। स्वरों का लगाव खां साहब की अपनी मौलिक थी । जैसा उनका स्वभाव शांत और गम्भीर था वैसा हो उनकी गायन शैली थी। आलाप में स्वरों की बढ़त एक विशेष प्रकार की थीं, जिसे खन्डमेरु पद्धति कहते हैं। इस पद्धति में गणित के अनुसार स्वरों का उलट फेर किया जाता है,

इसलिये आलाप की बढ़त में दर्बारी कानड़ा अथवा मियां मल्हार ऐसे रागों में अमीर खां को मध्य सप्तक के पंचम तक पहुँचने में ही काफी समय लग जाता था। इसलिये उनका गायन साधारण श्रोता के योग्य नहीं रहा। उन्हें विलम्बित झूमरा ताल बहुत पसन्द थी। गायन के साथ लड़ंत भिड़ंत तनिक पसन्द नहीं था। वे सीधा-सीधा लयदार ठेका ही पसन्द करते थे। खां साहब न ठुमरी गाते और न किसी दूसरे प्रकार के हल्के गीत ही गाना पसन्द करते थे। कभी-कभी तराना ही गा लेते थे। उन्हें विलम्बित ख्याल बहुत प्रिय था। रागों में मुलतानी, दरबारी काहड़ा, शुद्ध कल्याण, आभोगी, ललित, मियां मल्हार, भटियार, मारवा, तोड़ी और सुघराई बहुत पसन्द थीं। उनके आलाप में अब्दुल वहीद खां के गायन का, मुराद खाँ और वहीदखां के बीन का और तानों में रज्जब अली खां का प्रभाव दिखाई पड़ता था।

सन् 1967 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत किये गये और सन् 1971 में भारत सरकार ने पद्मभूषण से अलंकृत किया। उनकी गायकी बड़ी प्रभावपूर्ण थी जिसकी छाया सभी नवयुवक गायकों में दिखाई पड़ती थी। ऐसे प्रतिभावान कल्पनाशील गायक की मृत्यु 13 फरवरी 1974 को कलकत्ता में एक मोटर-दुर्घटना में हो गई। उनकी मृत्यु से संगीत-जगत को बड़ा आघात पहुँचा। उनके शिष्य दिल्ली के अमरनाथ का गायन सुनकर उस्ताद अमीर खां को बरबस याद आ जाती है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

1.1 अमीर खाँ कौन से गाँव के रहने वाले थे?

1) सहारनपुर

2) बोधगया

3) किराना

4) फतेहपुर

1.2 अमीर खाँ को संगीत नाटक अकादमी द्वारा कब पुरस्कृत किया गया?

1) 1921

2) 1926

3) 1914

4) 1967

1.3 अमीर खाँ का जन्म कब हुआ?

1) 1912

2) 1915

3) 1920

4) 1930

1.4 अमीर खाँ संगीत की कौन सी विधा से संबंध रखते थे?

1) गायन

2) सितार वादन

3) नृत्य

4) सुरबहार वादन

1.5 अमीर खाँ की मृत्यु कब हुई?

1) 13 फरबरी सन् 1974

2) 19 अक्टूबर सन् 1937

3) 13 मार्च सन् 1974

4) 28 फरबरी सन् 1974

1.4 उस्ताद शाहिद परवेज

उस्ताद शाहिद परवेज़ इटावा घराने के सितार वादकों की सातवीं पीढ़ी के सबसे चमकते सितारे हैं। जिनके बारे में कहा जाता है, कि उनका सितार गाता है। हिन्दोस्तानी शास्त्रीय संगीत में इटावा घराना सितार व सुरबहार वाद्यों के लिए जाना जाता है। जिसमें एक से एक बढ़कर उस्ताद हुए हैं जिन्होने संगीत की दुनियां में अपनी कला का परचम लहराया, जिनमें उ. इमदाद खां, जिन्होंने इमदाद खानी बाज अर्थात शैली विकसित की, उ. साहेबदाद खां, उ. इनायत खां, उ. वाहिद

खां, उ.विलायत खां के नाम प्रमुख हैं। इस घराने के कलाकारों ने सात पीढ़ियों से सितार व सुरबहार के अतिरिक्त किसी अन्य वाद्य को हाथ नही लगाया।

ऐसे सांगीतिक घराने में उस्ताद शाहिद परवेज़ का जन्म 14 अक्तुबर 1955 में मुम्बई में हुआ। आपके पिता उ. अज़ीज़ खां शास्त्रीय संगीत के एक जाने माने कलाकार थे किन्तु वे शास्त्रीय संगीत को छोड़ मुम्बई में फिल्मों के लिए बजाते थे, जिससे उनके पिता काफी नाराज रहते थे कि उनका काबिल बेटा अपने शास्त्रीय संगीत की विरासत को छोड़ फिल्म संगीत में डूबा रहता है। ऐसे में दादा उ. वहीद खां ने अपने नन्हे से के पोते को गोद में लेकर संगीत की शिक्षा देना प्रारम्भ किया। एक दिन उ. वहीद खां ने अपने बेटे उ. अज़ीज़ खां को बुलाकर समझाया कि अगर तुम मेरे पोते को शास्त्रीय संगीत की शिक्षा नही दोगे तो मैं मैं तुम्हे कभी भी माफ नहीं करूँगा। इस बात से डरकर उ. अजीज़ खां ने फिल्म इंडस्ट्री व मुम्बई दोनों छोड़, अपनी बाकी जिन्दगी अपने बच्चे को सितार सिखाने में लगाने के लिए वापस गांव आ गये।पिता ने तीन साल की उम्र से शाहिद परवेज़ को संगीत की शिक्षा देनी प्रारम्भ की, किन्तु परिवार की परम्परा थी कि सबसे पहले गाना सिखाने की, तो एक साल तक उन्हे गाना सिखाया गया। पहले गुरू दादा वहीद खां थे, बाद में चाचा उ. हाफिज खां मस्ताना, जो फिल्म इंडस्ट्री में कम्पोजर भी थे, से गाना सिखा । आपने दिल्ली घराने के उ. मुन्ने खां से तबले की शिक्षा भी प्राप्त की। तत्पश्चात सितार की साधना प्रारम्भ की।

कठिन परिश्रम, लगन, अथक रियाज़ से आप बेहद कम समय में सुर पर विलक्षण पकड़, राग निरूपण में कुशलता, लयकारियों पर अधिकार प्राप्त कर मात्र आठ वर्ष की उम्र में मंचासीन हुए एवं यह क्रम अनवरत चलता रहा। आज यह उसी साधना का प्रतिफल है कि आपका नाम विश्व के सर्वश्रेष्ठ सितारियों में गिना जाता है।

उ. शाहिद परवेज़ की सितार वादन शैली में एक ओर जहां उ. अमीर खां साहब की ख्याल गायकी का अंग परिलक्षित होता है, तो दूसरा ओर उ. विलायत खां साहब की परम्परा व नई चीजों का समावेश, उ. गुलाम अली खां साहब के मोतीयों से बिखरते सुरों की खनक इनके सितार में आसानी से सुनी जा सकती है। लयकारियों का ऐसा अभुतपूर्व नियन्त्रण जो अपने श्रोताओं को हर बार आश्चर्य चकित कर जाता है। स्वर लय ताल पर इनका आधिपत्य इतना अधिक माना जाता है कि गुनीजन कहते है, कि इनका सितार गले का काम करता है। उ. शाहिद परवेज के घराने की विशेषता ही, गायकी अंग है, जिसमें सितार के तारों के जरिए गले जैसी मिठास पैदा की जाती है। तार को छेड़ने के बाद मींड

मुर्कियों और गमक का काम काम आप सितार पर करते हैं, वह सुनते ही बनता है। प्रत्येक राग में जिस सफाई से तोड़े व तानें निर्बाध गति से बजाते हैं, ये केवल इनकी ही विशेषता है।

उ. शाहिद परवेज़ देश व दुनिया के सभी बड़े संगीत समारोहों में प्रस्तुतियां दे चुके हैं। अमेरिका, यूरोप, कनाडा, यू एस. एस. आर., मिडिल ईस्ट और ऑस्ट्रेलिया में आयोजित "फेस्टीवल ऑफ इंडिया" में अपनी शानदार प्रस्तुतियां दे ख्याती अर्जित कर चुके हैं। आपके अनेकानेक ध्वनि मुद्रित एल. पी. रिकार्डस, केसेटस, सी.डी., डी.वी.डी. बाजार व यूटियूब पर उपलब्ध है।आपको शास्त्रीय संगीत की सेवा के लिए अनेकों सम्मान व उपाधियों से अलंकृत किया जा चुका है। जिनमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पदम्श्री 2012, आकाशवाणी व दूरदर्शन शीर्ष कलाकार, सुर सिंगार, कुमार गंधर्व सम्मान, एम. एल. कौसर सम्मान इत्यादि प्रमुख हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

1.6 उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ की प्रथम प्रस्तुति कब हुई थी?

1 6 वर्ष की आयु में

2 9 वर्ष की आयु में

3 8 वर्ष की आयु में

4 इनमे से कोई नहीं

1.7 उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ के पिता का नाम क्या था?

1 उ. अज़ीज़ खां

2 जाकिर हुसैन

3 अल्लाह रक्खा

4 उस्ताद विलायत खाँ

1.8 उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ का जन्म कब हुआ?

1 1960

21955

3 1976

4 1977

1.9 उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ संगीत की कौन सी विधा से संबंध रखते थे?

1 गायन

2 सितार वादन

3 नृत्य

4 सुरबहार वादन

1.10 उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ को पद्मश्री कब मिला?

1) 2012

2) 2014

3) 2010

4) 2001

1.11 उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ का घराना कौन स है?

1) इटावा

2) इंदौर

3) दिल्ली

4) अजराड़ा

1.5 सारांश

आमिर खाँ और उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इनके जीवन परिचय के अध्ययन से इनके द्वारा रचित रचनाओं और कृतियों को समझने और जानने का अवसर मिलता है, जो किसी भी संगीत रसिक के सांगीतिक जीवन के लिए सोने पर सुहागे वाली बात हो जाती है। इनके जीवन परिचय के अध्ययन से शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक और रचनात्मक पक्ष मे

मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे संगीतज्ञ के गायन वादन और सांगीतिक सफर मे प्रेरणा, रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

1.6 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- सितार (Sitar): भारतीय शास्त्रीय संगीत का ऐसा तंत्री वाद्य यंत्र जो आज किसी भी परिचय का मोहताज नहीं रह गया है।

1.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

1.1) उत्तर: 3

1.2) उत्तर: 4

1.3) उत्तर: 1

1.4) उत्तर: 1

1.5) उत्तर:1

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

1.6) उत्तर: 3

1.7) उत्तर: 1

1.8) उत्तर: 2

1.9) उत्तर: 2

1.10) उत्तर:1

1.11) उत्तर: 1

1.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

1.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.10 पाठगत प्रश्न
आमिर खाँ

प्रश्न 1. आमिर खाँ का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. आमिर खाँ का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. आमिर खाँ का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4 आमिर खाँ द्वारा रचित रचनाओं का विस्तार सहित वर्णन करें।

उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ

प्रश्न 1. उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3 उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4 उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ द्वारा रचित रचनाओं एवं कृतियों का विस्तार सहित वर्णन करें।

इकाई-2
राग और रागों की जातियाँ

इकाई की रूपरेखा

2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य
2.3	राग परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	रागों की जातियाँ
	स्वयं जांच अभ्यास 2
2.5	सारांश
2.6	शब्दावली
2.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.8	संदर्भ
2.9	अनुशंसित पठन
2.10	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, राग का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है। साथ ही राग की जातियों का विस्तृत अध्ययन एवं वर्णन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए अभ्यास किया जाता है। अभ्यास से गायक की आवाज मे परिपक्क्वता और वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है। इसी कड़ी को जारी रखते हुए कलाकार को राग और रागों की जातियों का क्रियात्मक रूप मे भी ज्ञान होना चाहिए।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी राग का अर्थ परिभाषा एवं विस्तृत रूप को समझ पायेगे और साथ ही रागों की जातियों का भी गूढ़ता से अध्ययन कर पाएंगे जिससे राग मे लगने वालों स्वरों का जातियों के अनुसार अभ्यास कर सकेंगे। अगर कोई कलाकार किसी नए राग की स्व-रचना भी करता है तो वह रागों की जातियों का विस्तृत ज्ञान के पश्चात ही नई रचना कर सकेगा।

2.2 उद्देश्य

राग विषय इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- राग विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- राग की परिभाषाओं के गहन अर्थ को समझ सकेंगे।
- स्व-रागों की रचना कर सकेंगे।
- इस विषय के अध्ययन से गायन या वादन मे रागों को क्रियात्मक रूप मे समझने मे सहायता प्राप्त होगी।

राग की जाति विषय इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- राग की जाति विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- राग की जातियों के प्रकारोंको समझ सकेंगे।
- इस विषय के अध्ययन से गायन या वादन मे रागों को क्रियात्मक रूप मे समझने मे सहायता प्राप्त होगी।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल राग के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

2.3 राग का परिचय

राग भारतीय संगीत की वह आधारशिला है जिस पर समस्त शास्त्रीय संगीत का भवन खड़ा है। राग शब्द मूलतः संस्कृत भाषा का शब्द है जिसकी उत्पति "रंज" धातु से हुई है जिसका अर्थ रंगने से लिया जाता है। संगीतशास्त्रों में राग का अर्थ दो प्रकार से अर्थात सामान्य व विशेष अर्थ के रूप में लिया जाता है। सामान्य अर्थ में राग को रंजकता का पर्याय व द्योतक माना जाता है और विशेष अर्थ के रूप में राग एक ऐसे व्यक्तित्व का द्योतक है जो स्वरदेह और भावदेह का समन्वय है जिनमें से किसी एक के न होने पर अपूर्ण रहता है अर्थात स्वर वर्ण से विभूषित विशिष्ट ध्वनि 'राग' कहलाती है। राग का महत्व व स्वरूप का आधार इसके अन्तर्गत विशिष्ट स्वरावली के क्रमिक विकास पर आधारित होता है जिसका सम्बन्ध षड्ज से अन्य स्वरों के परस्पर सम्बन्धों के द्वारा निर्धारित होता है। यह सम्बन्ध जितना अधिक गहरा व पुष्ट होगा राग रूप उतना अधिक रंजक व सुदृढ़ होगा।

भारतीय संगीत में राग शब्द का प्रयोग प्राचीनकाल से होता आया है महर्षि भरत कृत नाटयशास्त्र में राग शब्द का प्रयोग किया गया है किन्तु केवल नाम रूप में जाति गायन के अन्तर्गत चर्चा की है। 'राग' शब्द की विस्तृत चर्चा सर्वप्रथम मंतगमुनि ने अपने ग्रन्थ वृहद्देशी में की जिसके अनुसार विशिष्ट स्वर वर्ण (गान क्रिया) से ध्वनि भेद के द्वारा जो जनरंजन में समर्थ है, वह राग है।

अतः ध्वनि की वह विशिष्ट रचना जिसे स्वर और वर्ण का सौन्दर्य प्राप्त हो जो सुनने वाले के मन का रंजक कर चित को प्रसन्न करे उसे राग कहते हैं।

परिभाषा

1) पंडित व्यंकट मुखी के अनुसार

'रंजयन्ति मनांसीति रागाः।'

2) शारंगदेवकृत संगीत रत्नाकर के अनुसार-

योऽयं ध्वनि-विशेषस्तु स्वर वर्ण विभूषितः ।

रंजको जनचित्तनां स राग कथितौ बुधै ॥

3) सोमनाथ के अनुसार

स्वरवर्ण भूषितौ यो ध्वनि भेदो रंजकः स राग इह।

4) मतंगमुनिकृत वृहदेशी के अनुसार-

स्वरवर्ण विशेषण ध्वनिभेदेन वा पुनः।

रंज्यते येन यः कश्चित् स रागः समतः सताम् ।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

2.1) राग शब्द मूलतः कौन सी भाषा से लिया गया है?

1 हिन्दी

2 जर्मन

3 संस्कृत

4 उर्दू

2.2) 'रंजयन्ति मनांसीति रागाः' परिभाषा किसके द्वारा दी गई है?

1 व्यंकटमखी

2 शारंगदेव

3 सोमनाथ

4 कोई नहीं

2.3) योऽयं ध्वनि-विशेषस्तु स्वर वर्ण विभूषितः ।रंजको जनचित्तनां स राग कथितौ बुधै ।। परिभाषा किसके द्वारा दी गई है?

1 व्यंकटमखी

2 शारंगदेव

3 सोमनाथ

4 कोई नहीं

2.4) स्वरवर्ण विशेषण ध्वनिभेदेन वा पुनः।रंज्यते येन यः कश्चित् स रागः समतः सताम्" परिभाषा किसके द्वारा दी गई है?

1 व्यंकटमखी

2 शारंगदेव

3 सोमनाथ

4 मतंग मुनि

2.5) राग शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कहाँ हुआ?

1भरत कृत नाट्यशास्त्र

2 गीतगोबिन्द

3 बृहदेशी

4 कोई नहीं

4.4 रागों की जातियाँ

सत्रहवीं शताब्दी में "चतुर्दण्डिप्रकाशिका" नामक संगीत-ग्रन्थ में पं० व्यंकटमखी ने यह भी सिद्ध किया कि एक थाट से गणितानुसार 484 रागों की उत्पत्ति हो सकती है। रागों की यह उत्पत्ति रागों की जातियों पर आधारित है। रागों में लगने वाले स्वरों की विभिन्न संख्याओं के कारण उनमें जो अलग-अलग वर्ग किये गये हैं उन्हें रागों की जातियाँ कहते हैं। राग में अधिक-से-अधिक सात स्वर लगते हैं और कम-से-कम पाँच। इस प्रकार कुल तीन प्रकार की मुख्य जातियाँ होती हैं।

1) सम्पूर्ण जाति –ऐसे राग जिनमे सात स्वर लगते हों वो सम्पूर्ण जाति के राग कहलाते हैं।

2) षाड़व - ऐसे राग जिनमे छः स्वर लगते हों वो षाड़व जाति के राग कहलाते हैं।

3) औड़व - ऐसे राग जिनमे पाँच स्वर लगते हों वो औड़व जाति के राग कहलाते हैं।

यह तो हुई मुख्य तीन जातियाँ, परन्तु रागों में आरोह तथा अवरोह दोनों होते हैं और ऐसा हो सकता है कि किसी राग के आरोह में 7 स्वर लेंगे और अवरोह में 7 से कम लेंगे इस बात का ध्यान रखते हुए इन 3 जातियों को तीन-तीन विभागों में बाँट दिया है अर्थात् कुल 9 जातियाँ होती हैं, जो इस प्रकार हैं :-

1) सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

2) सम्पूर्ण-षाड़व

3) सम्पूर्ण-औड़व

4) षाड़व-सम्पूर्ण

5) षाड़व-षाड़व

6) षाड़व-औड़व

7) औड़व-सम्पूर्ण

8) औड़व-षाड़व

9) औड़व-औड़व।

1) सम्पूर्ण-सम्पूर्ण- इस जाति मे राग के आरोह और अवरोह दोनों मे सात-सात स्वर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

2) सम्पूर्ण षाड़व- इस जाति मे राग के आरोह मे सात और अवरोह मे छः स्वर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण

आरोह-सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध म ग रे सा।

3) सम्पूर्ण-औड़व- इस जाति मे राग के आरोह मे सात और अवरोह मे पाँच स्वर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां ध प ग रे सा।

4) षाड़व-सम्पूर्ण- इस जाति मे राग के आरोह मे छः और अवरोह मे सात स्वर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण

आरोह- सा रे ग म ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

5) षाड़व-षाड़व- इस जाति मे राग के आरोह और अवरोह दोनों मे छः-छः स्वर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण

आरोह- सा रे ग म ध नि सां

अवरोह- सां नि ध म ग रे सा।

6) षाड़व-औड़व- इस जाति मे राग के आरोह मे छः और अवरोह मे पाँच स्वर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण

आरोह- सा रे ग म ध नि सां

अवरोह- सां ध प ग रे सा।

7) औड़व-सम्पूर्ण- इस जाति मे राग के आरोह मे पाँच और अवरोह मे सात स्वर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण

आरोह- सा रे ग प ध सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

8) औड़व-षाड़व- इस जाति मे राग के आरोह मे पाँच और अवरोह मे छः स्वर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण

आरोह- सा रे ग प ध सां

अवरोह- सां नि ध म ग रे सा।

9) औड़व-औड़व- इस जाति मे राग के आरोह और अवरोह दोनों मे पाँच-पाँच स्वर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण

आरोह-सा रे ग प ध सां

अवरोह- सां ध प ग रे सा।

उपरोक्त उदाहरण जातियों के प्रकार मात्र समझने के लिए दिए गये हैं। रागों के स्वर आगे पीछे हो सकते हैं, परंतु संख्या ठीक वैसे ही रहेगी जैसे उपरोक्त उदाहरण मे दी गई है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 2

2.6 जिन रागों मे आरोह अवरोह मे सातों स्वर लगते हैं उनकी जाति क्या कहलाती है?

1 औड़व- औड़व

2 सम्पूर्ण –सम्पूर्ण

3 औड़व- षाड़व

4 कोई नहीं।

2.7 जिन रागों मे आरोह अवरोह मे छः स्वर लगते हैं उनकी जाति क्या कहलाती है?

1 औड़व-औड़व

2 औड़व-सम्पूर्ण

3 षाड़व-षाड़व

4 कोई नहीं।

2.8 जिन रागों मे आरोह अवरोह मे पाँच स्वर लगते हैं उनकी जाति क्या कहलाती है?

1 औड़व-औड़व

2 औड़व-सम्पूर्ण

3 षाड़व-षाड़व

4 कोई नहीं।

2.9 जिन रागों मे आरोह मे छः और अवरोह मे पाँच स्वर लगते हैं उनकी जाति क्या कहलाती है?

1 औड़व-औड़व

2 षाड़व-औड़व

3 षाड़व-षाड़व

4 कोई नहीं।

2.10 जिन रागों मे आरोह मे सात और अवरोह मे पाँच स्वर लगते हैं उनकी जाति क्या कहलाती है?

1 औड़व-औड़व

2 षाड़व-औड़व

3 षाड़व-षाड़व

4 संपूर्ण-औड़व

2.5 सारांश

राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। राग पर ही तो हिन्दुस्तानी शासतीय संगीत आधारित है। रागों के अभ्यास से अलंकारों के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत के अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। रागों के अभ्यास से किसी भी राढ़ के संगीत को गाने बजने मे समस्या नहीं होती। क्यूंकि शास्त्रीय संगीत, संगीत का आधार है। इसके बिना किसी भी अन्य संगीत मे पारंगत नहीं बना जा सकता।

1.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।

- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।
- जाति: रागों में लगने वाले स्वरों की विभिन्न संख्याओं के कारण उनमें जो अलग-अलग वर्ग किये गये हैं उन्हें रागों की जातियाँ कहते हैं।

1.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

2.1 उत्तर: 3

2.2 उत्तर: 1

2.3 उत्तर: 2

2.4 उत्तर: 4

2.5 उत्तर: 1

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

2.6 उत्तर: 2

2.7 उत्तर: 3

2.8 उत्तर: 1

2.9 उत्तर: 2

2.10 उत्तर: 4

1.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

1.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.10 पाठगत प्रश्न
राग का अर्थ

प्रश्न 1. राग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग का अर्थ परिभाषा एवं राग के नियम विस्तार से लिखिए।

राग की जातियाँ

प्रश्न 3. राग का अर्थ परिभाषा एवं राग की जाति का अर्थ एवं परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 4. राग की जाति का अर्थ एवं प्रमुख जातियों का वर्णन करें।।

प्रश्न 5. राग की परमुख जातियों से उत्पन्न नौ उपजातियों को विस्तार सहित लिखिए।

प्रश्न 6. सम्पूर्ण, षाड़व और औड़व- औड़व जातियों की विस्तृत व्याख्या और इन जातियों वाले रागों के नाम भी लिखें।

इकाई-3
तीन ताल और दादरा ताल

इकाई की रूपरेखा

3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य
3.3	तीन ताल परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	दादरा ताल के उदाहरण
	स्वयं जांच अभ्यास 2
3.5	सारांश
3.6	शब्दावली
3.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.8	संदर्भ
3.9	अनुशंसित पठन
3.10	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, ताल का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। लेकिन राग के साथ अगर ताल न हो तो ऐसे संगीत की तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं तो उन्हें राग के साथ ताल का भी उतना ही ज्ञान होना चाहिए जितना कि राग का । गायन या वादन का अभ्यास अगर ताल के साथ किया जाए तो ताल मे पकड़ तो आती ही है, साथ ही प्रस्तुति मे भी चार चाँद लग जाते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तीन ताल और दादरा ताल विषय का अर्थ परिभाषा और ताल की एकगुण, दुगुण और तीनगुण के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर ताल के साथ अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता परिपक्क्वता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात स्वयं ताल को समझने और ताल के साथ न्याय करने में समर्थ हो सकेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- ताल का अर्थ समझ सकेंगे।
- विभाग, सम, ताली और खाली का अर्थ समझ सकेंगे।
- तीन ताल का परिचय जान सकेंगे।
- दादरा ताल का परिचय जान सकेंगे।
- तीन ताल की एकगुण दुगुण और तीन गुण करना जान सकेंगे।
- दादरा ताल की एकगुण दुगुण और तीन गुण करना जान सकेंगे।

- तीन ताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।
- तीन ताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल तीन ताल और दादरा ताल के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

3.3 तीन ताल परिचय

ताल नाम- तीन ताल

मात्राएं- सोलह मात्राएं

वाद्य यंत्र- तबला वाद्य यंत्र का ताल

खाली- एक खाली (नौवीं मात्रा पर)

विभाग- चार-चार मात्राओं के चार मात्रा विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम तथा पाँचवीं और तेरहवीं मात्राओं पर क्रमशः पहली और दूसरी ताली

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत मे ख्याल गायन/वादन विधा के साथ बहुतायत किया जाता है। इस ताल को सभी तालों का राजा भी कहा जाता है।

तीन ताल ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
चिन्ह	**x**				**2**				**0**				**3**			

तीन ताल (दुगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धाधि	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा	धाधि	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा
चिन्ह	**x**				**2**				**0**				**3**			

तीन ताल (तिगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धाधिं धिं	धाधा धिं	धिंधा धा	तिंतिं ता	ताधिं धिं	धाधा धिं	धिंधा धा	धिंधिं धा	धातिं तिं	ताता धिं	धिंधा धा	धिंधिं धा	धाधिं धिं	धाधा तिं	तिंता ता	धिंधि धा
चिन्ह	**x**				**2**				**0**				**3**			

तीन ताल (चौगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धाधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धिंतिं तिंता	ताधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धिंतिं तिंता	ताधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धिंतिं तिंता	ताधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धिंतिं तिंता	ताधिं धिंधा
चिन्ह	x				**2**				**0**				**3**			

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

3.1 तीन ताल मे कितनी मात्राएं होती हैं?

1) 16

2) 14

3) 10

4) 12

3.2 तीन ताल मे कितने मात्रा विभाग होते हैं?

1) 5

2) 4

3) 6

4) 12

3.3 तीन ताल मे कौन सी मात्रा पर सम है ?

1) 5

2) 8

3) 1

4) 12

3.4 तीन ताल मे सम को मिलाकर कितनी ताली होती हैं?

1) 5

2) 3

3) 5

4) 12

3.5 तीन ताल मे कितनी खाली होती हैं?

1) 5

2) 1

3) 5

4) 2

3.4 ताल दादरा परिचय

ताल नाम- दादरा ताल

मात्राएं- छः मात्राएं

वाद्य यंत्र- तबला वाद्य यंत्र का ताल

खाली- एक खाली (चौथी मात्रा पर)

विभाग- तीन-तीनमात्राओं के दो मात्रा विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग गीत , गजल, भजन और लोक संगीत मे बहुतायत किया जाता है।

ताल दादरा ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6
बोल	धा	धिं	ना	धा	ति	ना
चिन्ह	x			0		

ताल दादरा (दुगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6
बोल	धाधि	नाधा	तिना	धाधि	नाधा	तिना
चिन्ह	x			0		

ताल दादरा (तिगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6
बोल	धाधिना	धातिना	धाधिना	धातिना	धाधिना	धातिना
चिन्ह	x			0		

ताल दादरा (चौगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6
बोल	धाधिनाधा	तिनाधाधि	नाधातिना	धाधिनाधा	तिनाधाधि	नाधातिना

चिन्ह	x	0

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

3.6 दादरा ताल मे कितनी मात्राएं होती हैं?

1) 3

2) 5

3) 6

4) कोई नहीं

3.7 दादरा ताल मे कितने मात्रा विभाग हैं?

1) 2

2) 5

3) 6

4) कोई नहीं

3.8 दादरा ताल सम के अलावा कितनी ताली हैं?

1) 2

2) 1

3) 6

4) कोई नहीं

3.9 दादरा ताल मे कितनी खाली हैं?

1) 2

2) 8

3) 6

4) 1

3.10 धा धी ना, धा ति ना किस ताल के बोल हैं ?

1) झपताल

2) एकताल

3) चौताल

4) दादरा

3.5 सारांश

तीन ताल और दादरा ताल भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ताल के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे ताल अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। ताल मे पकड़ के साथ किसी भी मात्रा से तान या बंदिश उठाकर सम पर विचित्रता पैदा करते हुए आया जाता है।

3.6 शब्दावली

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत के समान गति को लय कहते हैं, संगीत में लय अत्यंत महत्पूर्ण हैं, लय के बिना संगीत की कल्पना भी करना असंभव हैं।
- मात्रा (Matra): ताल की इकाई को मात्रा कहते हैं।
- ताली (Taali): सम के अलावा अन्य विभागों की पहली मात्रा पर जहाँ हथेली पर दुसरे हाथ की हथेली के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ताली कहते हैं।
- खाली (Khali): ताल देते समय जहाँ विभाग की प्रथम मात्र पर ध्वनि न करके केवल हाथ हिलाकर इशारा कर देते हैं, उसे 'खाली' कहते हैं. अधिकतर खाली ताल के बीच की मात्र अथवा उसके आस पास हीं कहीं पड़ती है।

- विभाग (Vibhag): ताल को कुछ निश्चित मात्राओं में बांटना जिससे भरे एवं खाली जगहों का पता लगे उसे विभाग कहते हैं

3.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.1) उत्तर: 1

3.2) उत्तर: 2

3.3) उत्तर: 3

3.4) उत्तर: 2

3.5) उत्तर: 2

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

3.6) उत्तर: 3

3.7) उत्तर: 1

3.8) उत्तर: 2

3.9) उत्तर: 4

3.10) उत्तर: 4

3.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2002). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

3.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तीनताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 2. दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 3 तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 4. तीनताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 5. दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 6. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 7. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं तीन ताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 8. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं दादरा ताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 9. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं तीन ताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

प्रश्न 10. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं दादरा ताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

इकाई-4
सप्तक और आरोह अवरोह व पकड़

इकाई की रूपरेखा

4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य
4.3	सप्तक परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	आरोह-अवरोह और पकड़ परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
4.5	सारांश
4.6	शब्दावली
4.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.8	संदर्भ
4.9	अनुशंसित पठन
4.10	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह इकाई चौथी है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, सप्तक और आरोह अवरोह व पकड़ का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए तथा शास्त्रीय संगीत का आधार दृढ़ करने के लिए आधारभूत विषय आरोह-अवरोह और पकड़ तथा सप्तक विषयों का अध्ययन किया जाता है। इन विषयों के अध्ययन से गायक या वादक को शास्त्रीय संगीत के आधार का ज्ञान होता है और सप्तक के स्वरों का ज्ञान होने से रागों मे प्रयुक्त स्वरों को आरोह अवरोह के तथा पकड़ के आधार पर समझने तथा जानने मे सहायता मिलती है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी सप्तक, आरोह-अवरोह और पकड़ विषय का अर्थ परिभाषा का विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही शास्त्रीय संगीत के आधारभूत विषयों मे अपनी पकड़/मजबूती का सकेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- सप्तक विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- सप्तक के प्रकारों को समझ सकेंगे।
- सप्तक के अनेकों प्रकारों एवं सप्तक की स्वर पहचान को जान एवं समझ सकेंगे।
- आरोह विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- अवरोह विषय का अर्थ समझ सकेंगे।

- पकड़ विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- राग मे पकड़ का महत्व समझ सकेंगे।
- राग को पकड़ के माध्यम से बहुत आसानी से समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल सप्तक, आरोह अवरोह और पकड़ के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

4.3 सप्तक

संगीत में मूल स्वर सात हैं जिनका नाम क्रमशः सा, रे, ग, म, प, ध, नि अर्थात षड्ज, ऋषम, गन्धार, मध्यम, पंचम, धैवत एवं निषाद हैं। इन मुख्य सात स्वरों को क्रमानुसार लिखने या गाने से संगीत में "सप्तक" का निर्माण होता है। कहने का अर्थ यह हुआ कि जब सात स्वरों के समुह को क्रमबद्ध रूप में लिखा या गाया जाता है तब उसे 'सप्तक" कहते है।

गाते या बजाते समय सा रे ग म प ध नि कहने के बाद जब अगले सप्तक का सा जोड़ कर हम प्रयोग करते हैं। तब उसमें सा रे ग म प ध नि सां आठ स्वरों का प्रयोग होने से अष्टक का निर्माण होता है। जिसे पाश्चात्य संगीत में ऑक्टेव (Octave) कहा जाता है।

परिभाषा

सात स्वरों के क्रमानुसार समुह को "सप्तक" कहते है। सप्तक के निर्धारण में मुख्य रूप से ध्यान देने योग्य बात यह है कि सप्तक निर्माण में सातों स्वर एक के बाद एक आयें अन्यथा मात्र सात स्वरों के समुह को सप्तक नहीं कहा जाएगा, केवल स्वर समुह मात्र माना जाएगा।

"सा" से "नि" स्वर तक क्रमानुसार अर्थात सा, रे, ग, म, प, ध, नि- एक सप्तक होता है। "नि" स्वर के बाद जो "सा" आएगा यह पहले "सा" से दुगना ऊँचा होगा जिससे एक नए सप्तक का प्रारम्भ होगा। इस प्रकार से एक के बाद एक अनेकों सप्तकों का निर्माण होता है किन्तु विद्वज्जनों ने संगीत में मुख्य रूप से तीन सप्तकों का व्यवहार माना है क्यूंकि

साधारणतः इंसान की आवाज तीन सप्तकों तक ही आचरण कर सकती है। तीन सप्तकों के नाम और वर्णन निम्न प्रकार से है।

1. मन्द्र सप्तक

2. मध्य सप्तक

3. तार सप्तक

1) मन्द्र सप्तक

स्वाभाविक आवाज से दुगनी नीची आवाज को "मन्द्र सप्तक" की आवाज कहा जाता है। इस सप्तक के स्वर नीचे व भारी होते हैं जिसके कारण इस सप्तक के स्वरों को गाने से हृदय पर जोर पड़ता है। इस सप्तक के स्वारी को दर्शाने अर्थात लिखने-पढ़ने के लिए इस सप्तक के स्वरों के नीचे बिंदी लगाई जाती है यथा-नि॒ ध़ प़ म़।

2) मध्य सप्तक

"मध्य सप्तक" वह सप्तक कहलाता है जिसके स्वर गाने के लिए गले संगीत 'सहज कोई जोर नहीं पड़ता और न ही कोई कष्ट होता है। दूसरे शब्दों में इसे यदि व्यक्ति की स्वाभाविक आवाज कहा जाए तो कुछ गलत नहीं होगा। यह आवाज न अधिक ऊंची होती है और न ही अधिक नीची होती है। जिसके कारण इसे मध्य सप्तक की आवाज कहा जाता है। इस सप्तक के स्वरों को दर्शाने अर्थात लिखने पढ़ने के लिए इन स्वरों पर किसी चिन्ह का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात सा, रे, ग, म, प, ध, नि इस प्रकार लिखे गए स्वर "मध्य सप्तक" के स्वर माने जाते है। जिन वाद्यों में तीन से अधिक सप्तक होते हैं उन वाद्यों में यह बीच का सप्तक होता है। व्यवहार में मध्य सप्तक को प्रथम सप्तक माना जाता है किन्तु तीनों सप्तकों ले का नाम यदि क्रमानुसार लिया जाए तो प्रथम सप्तक मन्द्र सप्तक हो जाता है।

3) तार सप्तक

स्वाभाविक आवाज से दुगनी ऊँची आवाज को "तार सप्तक" की आवाज कहा जाता है। इस सप्तक के स्वर ऊँचे होने के कारण इन स्वरों को गाने पर तालू पर जोर पड़ता है। इस सप्तक के स्वरों को दर्शाने अर्थात लिखने-पढ़ने के लिए इन स्वरों के ऊपर बिन्दी लगाई जाती है यथा- सां रें गं मं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

4.1 सात स्वरों के क्रमानुसार समूह को क्या कहते हैं?

1) श्रुत

2) आंदोलन

3) सप्तक

4) स्वर

4.2 जिन स्वरों के नीचे बिंदी लगती है वो स्वर होते हैं?

1) तार सप्तक

2) मध्य सप्तक

3) 1 और 2

4) मंद्र सप्तक

4.3 जिन स्वरों के ऊपर बिंदी लगती है वो स्वर होते हैं?

1) तार सप्तक

2) मध्य सप्तक

3) 1 और 2

4) मंद्र सप्तक

4.4 नि कौन से सप्तक का स्वर है ?

1) तार सप्तक

2) मध्य सप्तक

3) मंद्र सप्तक

4) 1 और 2

4.5 गं कौन से सप्तक का स्वर है ?

1) मध्य सप्तक

2) तार सप्तक

3) मंद्र सप्तक

4) 1 और 2

4.4 आरोह-अवरोह व पकड़-
आरोह-अवरोह

आरोह-अवरोह संस्कृत भाषा के शब्द है। आरोह का अर्थ ऊपर चढ़ना तथा अवरोह का अर्थ नीचे उतरना है। संगीत में आरोह-अवरोह का अर्थ है जब नाद के आधार पर नीचे से ऊपर अर्थात किसी स्वर से उपर के स्वर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते है और इसके ठीक विपरीत नाद के आधार पर ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया के। अवरोह कहा जाता है। आरोह-अवरोह राग के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने वाले वे पारिभाषिक शब्द हैं जो अधिकांशतः साथ-साथ प्रयुक्त होते है। आधुनिक राग लक्षणों में आरोह-अवरोह भी एक लक्षण है। उदाहरण के लिए- सा रे ग म प ध नि सां आरोही क्रम है और सां नि ध प म ग रे सा अवरोही क्रम है।

आधुनिक राग लक्षण के अन्तर्गत आरोह-अवरोह का महत्व इसलिए भी अधिक है कि इनके द्वारा राग में स्वरों का प्रयोग किस क्रम में हुआ है कि निश्चित जानकारी प्राप्त होती है, क्योंकि आरोह-अवरोह का निर्माण उस राग के वर्जित स्वरों को छोड़कर एवं शेष स्वरों के प्रयोग द्वारा होता है जिससे इनके द्वारा स्वरों का प्रयोग किस क्रम में होगा, स्पष्ट होता है, साथ ही साथ आरोह-अवरोह राग की जाति के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि आरोह-अवरोह में सात-सात स्वर लगते हों तो सम्पूर्ण जाति यदि छः छः लगते हो षाडव और यदि पांच स्वर लगते हो तो औडव जाति कहा जाता है इसी प्रकार से यह अन्य जाति व उपजातियों के निर्धारण में सहायक सिद्ध होते हैं।

परिभाषा

नाद के आधार पर किसी स्वर से उपर के स्वर पर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते है और ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है।

पकड़

'पकड़ शब्द बोलचाल की भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ-पकड़ना, काबू करना व नियन्त्रित करना से लिया जाता है। 'पकड़ शब्द का यही अर्थ संगीत में यथावत ग्रहण किया गया है जिसका अर्थ है राग का वह छोटा सा समुदाय जिससे राग को पहचाना जा सके, उसे पकड़ कहते हैं।

प्रत्येक राग में एक ऐसा स्वर समुह या समुदाय होता है जिसे गाने या बजाने से उसे राग का स्वरूप स्पष्ट तथा व्यक्त होता है। इसी विशिष्ट स्वर समुदाय को उस राग की पकड़ कहा जाता है जैसे राग यमन की पकड़ नि रे ग रे, निरेसा, प म (म तीव्र) ग रे, नि रे सा है। इस छोटे से स्वर समुदाय को गाते या बजाते ही राग यमन का स्वरूप स्पष्ट हो जाएगा अर्थात इस पकड़ को गाते या बजाते ही श्रोताओं को राग यमन का स्पष्ट बोध हो जाएगा।

परिभाषा -

रागवाचक मुख्य स्वर समुदाय को पकड़ कहते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

4.6 स्वरों के चढ़ते क्रम को क्या कहते हैं।

1) श्रुति क्रम

2) अवरोही क्रम

3) आरोही क्रम

4) इनमे से कोई नहीं।

4.7 सा रे ग प ध सां भूपाली राग का हैं।

1) श्रुति क्रम

2) अवरोही क्रम

3) नाद

4) आरोही क्रम ।

4.8 स्वरों के उतरते/ घटते क्रम को क्या कहते हैं।

1) अवरोही क्रम

2 श्रुति क्रम

3) आरोही क्रम

4) इनमे से कोई नहीं।

4.9 सां नि ध प म ग रे सा अहीर भैरव राग का हैं।

1) श्रुति क्रम

2) अवरोही क्रम

3) नाद

4) आरोही क्रम।

4.10 ऐसा स्वर समूह जिसे गाने बजने से किसी विशेष राग का आभास हो क्या कहलाता है?

1) अवरोही क्रम

2) श्रुति क्रम

3) आरोही क्रम

4) पकड़

4.5 सारांश

सप्तक, आरोह-अवरोह और पकड़ भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अलंकारों के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत के आधार मे मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे अलंकार अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। अलंकार किसी भी राग मे या स्वरों के अनुसार ताल बद्ध तरीके से गाए एवं बजाए जा सकते हैं।

4.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): सप्तक के स्वरों से ही अलंकार बनाए जाते है। जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

4.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1 प्रश्नों के उत्तर

4.1 उत्तर: 3

4.2 उत्तर: 4

4.3 उत्तर: 1

4.4 उत्तर: 3

4.5 उत्तर: 2

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

4.6 उत्तर: 3

4.7 उत्तर: 4

4.8 उत्तर: 1

4.9 उत्तर: 2

4.10 उत्तर: 4

4.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

4.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.10 पाठगत प्रश्न

सप्तक

प्रश्न 1. सप्तक का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. सप्तक का विस्तृत परिचय और सप्तक के प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. सप्तक का विस्तृत परिचय और सप्तक के प्रकारों मे मंद्र सप्तक का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

प्रश्न 4. सप्तक का विस्तृत परिचय और सप्तक के प्रकारों मे मध्य सप्तक का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

प्रश्न 5. सप्तक का विस्तृत परिचय और सप्तक के प्रकारों मे तार सप्तक का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

आरोह अवरोह और पकड़

प्रश्न 1. आरोह अवरोह और पकड़ का विस्तृत परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. आरोह अवरोह और पकड़ का विस्तृत परिचय उदाहरण सहित लिखिए।

इकाई-5
लय और वर्ण

इकाई की रूपरेखा

5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य
5.3	लय परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	वर्ण परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
5.5	सारांश
5.6	शब्दावली
5.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.8	संदर्भ
5.9	अनुशंसित पठन
5.10	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह इकाई पाँचवीं है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, लय और वर्ण का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए तथा शास्त्रीय संगीत का आधार दृढ़ करने के लिए आधारभूत विषय लय और वर्ण विषयों का अध्ययन किया जाता है। इन विषयों के अध्ययन से गायक या वादक को शास्त्रीय संगीत के आधार का ज्ञान होता है और वर्ण और लय के आपसी सामंजस्य से जाब संगीत प्रदर्शन किया जाता है तो श्रोता अनायास ही प्रफुल्लित हो उठते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी लय और वर्ण विषय का अर्थ परिभाषा का विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही शास्त्रीय संगीत के आधारभूत विषयों मे अपनी पकड़/मजबूती का सकेंगे।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- लय विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- लय के प्रकारों को समझ सकेंगे।
- वर्ण विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- वर्ण के प्रकारों को समझ सकेंगे।
- राग मे वर्ण का महत्व समझ सकेंगे।
- राग मे लय का महत्व समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल लय और वर्ण के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

5.3 लय

लय एक नैसर्गिक प्रक्रिया है जिसका विस्तार मात्र संगीत तक ही नहीं अपितु समस्त प्रकृति में समाहित है। स्वयं मनुष्य जीवन का आधार श्वास-प्रश्वास की लय पर निर्भर करता है जो इसके लय तत्व का उत्कृष्ट उदाहरण है। लय एक अखण्ड व व्यापक क्रिया है। इसी क्रिया को नियन्त्रित अर्थात वांछित अन्तराल में बांधने से ताल का उद्भव हुआ है।

लय संगीत की आधारभूत क्रिया है, जिसका साधारण अर्थ गति से लिया जाता है। संगीत में लगने वाले काल अथवा समय की समान गति को 'लय' कहते है। ताल की एक मात्रा से दूसरी मात्रा के बीच जो समान बराबर समय लगता है उसे लय कहा जाता है।

विलंबित लय

जिस लय की चाल बहुत धीमी हो, उसे विलंबित लय कहते हैं। विलंबित लय का अंदाज, मध्य लय से यों लगाया जाता है-मान लीजिए, एक मिनट के आपने एक-सी चाल से 60 तक गिनती गिनी, तो उसे अपनी मध्य लय मान लीजिए। इसके बाद इसी एक मिनट में समान चाल से 30 तक गिनती गिनी, तो उसे ' विलंबित लय' कहेंगे, अर्थात् 30 तक गिनती जो गिनी गई, उसकी तय 60 वाली गिनती हो अपेक्षा धीमी हो गई, अर्थात् प्रत्येक गिनती में कुछ देर लगी। 'विलम्ब' का अर्थ है-देर।

मध्य लय

जिस लय की चाल विलंबित से तेज़ और द्रुत से कम हो, उसे 'मध्य लय' कहते हैं। यह लय बीच की होती है। 'मध्य' का अर्थ है- बीच।

द्रुत लय

जिस लय की चाल विलंवित लय से चौगुनी या मध्य लय से दुगुनी हो, उने 'द्रुत लय' कहेंगे। ऊपर बताया गया था कि 1 मिनट में समान चाल से 60 तक गिनती गिनकर 'मध्य लय' कायम की गई है। अब यदि 1 मिनट में 120 तक गिनती गिनी जाएगी, तो निश्चय ही गिनती की चाल तेज़ हो जाएगी। 'दूत' का अर्थ है- तेज़ ।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.1 संगीत में लगने वाले काल अथवा समय की समान गति को क्या कहते है।

1) संगीत

2) लय

3) ताल

4) कोई नहीं

5.2 "बहुत ही धीमी गति की लय" लय का कौन सा प्रकार है?

1) मध्य लय

2) द्रुत लय

3) विलंबित लय

4) सभी

5.3 "न ज्यादा तेज और न ज्यादा धीमी लय" लय का कौन सा प्रकार है?

1) मध्य लय

2) द्रुत लय

3) विलंबित लय

4) सभी

5.4 " तीव्र गति की लय" लय का कौन सा प्रकार है?

1) मध्य लय

2) द्रुत लय

3) विलंबित लय

4) द्रुत लय

5.5 लय कितने प्रकार की होती है?

1) 4

2) 5

3) 1

4) 3

5.4 वर्ण

अभिनव राग मंजरी ग्रंथ के अनुसार-

गान क्रियोच्यते वर्णःस चतुर्धा निरूपितः

स्थाय्यारोह्यरोही च संचारीत्यथ लक्षणम्।

अर्थात गाने की जो क्रिया है, उसे वर्ण कहते हैं। अर्थात गायन या वादन मे जो क्रियाएं प्रयोग की जाती हैं, वर्ण कहलाती हैं। वर्ण चार प्रकार के होते हैं, जिन्हें क्रमशः 1 स्थायी,2 आरोही, 3 अवरोही और 4 संचारी वर्ण कहते हैं।

स्थायी वर्ण-

एक ही स्वर बार-बार ठहर-ठहरकर बोलने या गाने की क्रिया को स्थायी वर्ण कहते हैं। जैसे- सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प। स्थायी का अर्थ है ठहर हुआ।

आरोही वर्ण-

नीचे के स्वर से ऊंचे स्वर तक चढ़ने या गाने की क्रिया को आरोही वर्ण कहते हैं। षडज से आगे ऋषभ और उसके बाद गांधार स्वरों तक एक-एक करके गाने कि क्रिया को आरोही क्रम कहा जाता है। उदाहरण के लिए- सा, रे, ग, म, प, ध, नि। आरोही का अर्थ है नीचे के स्वरों से ऊपर के स्वरों की ओर बढ़ना।

अवरोही वर्ण-

ऊंचे स्वरों से नीचे के स्वरों आने कि क्रिया या गाने की क्रिया को अवरोही वर्ण कहते हैं। तार सप्तक के सां से जब नीचे के स्वरों को बोला या गया जाता है तो वो अवरोही वर्ण है। उदाहरण के लिए- सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा। अवरोही का अर्थ है ऊपर के स्वरों से नीचे के स्वरों की ओर आना

संचारी वर्ण-

स्थायी, आरोही और अवरोही , इन तीनों वर्णों के संयोग (मिलावट) से जब स्वरों की उलट पलट की जाती है, अर्थात जाब तीनों वर्ण मिलकर अपना रूप दिखाते हैं, तब इस क्रिया को संचारी वर्ण कहते हैं। उपरोक्त तीनों वर्णों का मिश्रण संचारी वर्ण कहलाता है। उदाहरण के लिए- सा सा, रे ,रे ग,म,,प म, ग, रे, ध, ग, रे, सा।

ज्ञातव्य- गाते बजाते समय उपर्युक्त चारों वर्ण प्रयोग मे लाए जाते हैं । किसी भी संगीत गायन/वादन विधा मे चारों वर्ण अवश्य ही मिलेंगे, क्यूंकि इन चारों वर्णों के बिना गाँ क्रिया चल नहीं सकती।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.6 गाने की क्रिया को क्या कहते हैं?

1) क्रिया

2) नाद

3) वर्ण

4) सप्तक

5.7 “सा रे ग म प ध नि” वर्ण का कौन सा प्रकार है?

1) आरोही वर्ण

2) आभोगी वर्ण

3) संचारी वर्ण

4) अवरोही वर्ण

5.8 “सां नि ध प म ग रे सा ” वर्ण का कौन सा प्रकार है?

1) आरोही वर्ण

2) आभोगी वर्ण

3) संचारी वर्ण

4) अवरोही वर्ण

5.9 “सा सा सा सा रे रे रे रे ” वर्ण का कौन सा प्रकार है?

1) आरोही वर्ण

2) स्थायी वर्ण

3) संचारी वर्ण

4) अवरोही वर्ण

5.10 “सा सा सा सा रे रे रे रे ग म प म ग रे सा रे सा ” वर्ण का कौन सा प्रकार है?

1) आरोही वर्ण

2) स्थायी वर्ण

3) संचारी वर्ण

4) अवरोही वर्ण

5.5 सारांश

लय और वर्ण भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अलंकारों के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत के आधार मे मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे लय अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। राग मे अगर लय और वर्ण का सही तालमेल हो तो रसानुभूति अनायास ही हो जाती है।

5.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): सप्तक के स्वरों से ही अलंकार बनाए जाते है। जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

5.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1 प्रश्नों के उत्तर

5.1 उत्तर: 2

5.2 उत्तर: 3

5.3 उत्तर: 1

5.4 उत्तर: 4

5.5 उत्तर: 4

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

5.6 उत्तर: 3

5.7 उत्तर: 4

5.8 उत्तर: 1

5.9 उत्तर: 2

5.10 उत्तर: 4

5.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

5.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.10 पाठगत प्रश्न

लय

प्रश्न 1. लय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. लय का विस्तृत परिचय और लय के प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. लय का विस्तृत परिचय और लय के प्रकारों मे बियाड़ लय का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

प्रश्न 4. . लय का विस्तृत परिचय और लय के प्रकारों मे आड़ लय का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

प्रश्न 5. लय का विस्तृत परिचय और लय के प्रकारों मे कुआड़ लय का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

वर्ण

प्रश्न 1. वर्ण का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. वर्ण का विस्तृत परिचय और वर्ण के प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. वर्ण का विस्तृत परिचय और वर्ण के प्रकारों मे स्थायी वर्ण का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

प्रश्न 4. वर्ण का विस्तृत परिचय और वर्ण के प्रकारों मे आरोही वर्ण का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

प्रश्न 5. . वर्ण का विस्तृत परिचय और वर्ण के प्रकारों मे अवरोही वर्ण का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

प्रश्न 5. . वर्ण का विस्तृत परिचय और वर्ण के प्रकारों मे संचारीवर्ण का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

इकाई-6
सितार

इकाई की रूपरेखा

6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य
6.3	सितार परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	सारांश
6.5	शब्दावली
6.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7	संदर्भ
6.8	अनुशंसित पठन
6.9	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह छठी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, सितार अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए सितार वाद्य पर निरंतर अभ्यास किया जाता है। सितार वाद्य पर अभ्यास से वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी सितार विषय का अर्थ परिभाषा और सितार के अंगों एवं रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर रागों के अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात सितार के साथ सही व्यवहार करने मे समर्थ हो सकेंगे।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- सितार वाद्य का अर्थ समझ सकेंगे।
- सितार के ऐतिहासिक पक्ष को समझ सकेंगे।
- सितार के अंगों का विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे।
- सितार वाद्य को सुर मे करना सीख सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल सितार वाद्य\ के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

6.3 सितार परिचय

सितार के आविष्कार के सम्बन्ध में अभी तक कोई निश्चित मत नहीं है। बहुत-से लोगों का विचार है कि चौदहवीं शताब्दी में अमरी खुसरो ने वीणा के आधार पर 'सहतार' नामक वाद्य का आविष्कार किया। 'सहतार' एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ होता है, तीन तार का वाद्य । 'सहतार' ही बिगड़कर 'सितार' कहलाने लगा । प्रारम्भ में इस वाद्य में कुल तीन तार होते थे, परन्तु परिवर्तन के अनुसार तीन के स्थान पर अब इसमें सात तार लगाये जाने लगे हैं।

सितार के अंग

तूम्बा कद्दू अथवा लौकी का बना गोलाकार भाग तूम्बा कहलाता है

तबली- तूम्बे के ऊपर उसे ढँकने के लिए पतली लकड़ी का जो ढक्कन होता है, जिस पर घुरच आदि रखे जाते हैं, तबली कहलाती है।

घुरच- तबली के ऊपर लकड़ी अथवा हड्डी की एक चौकी होती है जिस पर सितार के तार रखे रहते हैं, घुरच (Bridge) कहलाती है।

कील या लँगोट- तूम्बे के सिरे पर सितार के तारों को बाँधने का जो प्रबन्ध होता है, उसमें अधिकतर लकड़ी अथवा हड्डी की कील लगाते हैं जिसमें तार बाँधे जाते हैं। इस कील को लँगोट, मोंगरा अथवा कील कहते हैं।

डाँड- तूम्बे के बाद जो लम्बा भाग सितार का होता है जिसमें खूंटियाँ आदि होती हैं, वह डाँड कहलाता है। यह लकड़ी का खोखला बना होता है। तानपूरे का डाँड सितार की डाँड से अधिक मोटा तथा गोलाकार होता है।

गुलू अथवा गुल- जिस स्थान पर तूम्बा और डाँड जुड़ते हैं उसे गुल अथवा गुलू कहते हैं।

तारगहन- खूँटियों के पास हड्डी या हाथी-दाँत की दो पट्टियाँ होती हैं। इसमें से जिसमें तार पिरोये जाते हैं तथा जिसमें तारों को पिरोने के लिए छिद्र होते हैं, उसे तारगहन कहते हैं।

अटी- तारगहन के बाद दूसरी पट्टी जिस पर तार रखे जाते हैं, वह अटी कहलाती है।

परदे- डाँड के ऊपर पीतल अथवा लोहे के परदे ताँत या धागे से बँधे रहते हैं, जिन पर अँगुली रखने से विभिन्न स्वर उत्पन्न किये जाते हैं। इनको 'परदे', 'सुन्दरी' अथवा 'कट' आदि नामों से पुकारते हैं। इनकी संख्या १६ से लेकर १९ तक होती है।

मनका- सितार के पहले तार में लँगोट (जहाँ तार बाँधे जाते है) और घुरच (Bridge) के बीच जो मोती पड़ी रहती है तथा जिसमें तार को स्वर से मिलाने में सहायता मिलती है, उसे मनका या गुरिया कहते हैं।

खूंटियाँ- सितार में लकड़ी की बनी सात खूंटियाँ होती हैं जिनसे तार कसे अथवा ढीले किये जाते हैं। तरब के सितार में १२ खूँटियाँ और होती हैं।

सितार के तार तथा उनका मिलाना -

सितार में सात स्वर होते हैं, जो इस प्रकार हैं-

(१) सितार का पहला तार फौलादी लोहे का बना होता है। इसे बाज का तार भी कहते हैं तथा मन्द्र सप्तक के मध्यम स्वर से इसे मिलाया जाता है। सितार-वादन में सबसे अधिक प्रयोग इसी तार का होता है, क्योंकि मन्द्र सप्तक के मध्य स्वर से तार सप्तक तक के स्वरों को इसी तार द्वारा निकालते हैं।

(२) सितार का दूसरा तार पीतल का बना होता है और जोड़ी का तार कहलाता है। इसे मन्द्र सप्तक के षड्ज स्वर से मिलाते हैं।

(३) दूसरे तार की तरह सितार का तीसरा तार भी पीतल का बना होता है। इसे भी जोड़ी का तार कहते हैं तथा मन्द्र सप्तक के षड्ज स्वर से मिलाते हैं।

क्योंकि ये तार मन्द्र सप्तक के षड्ज से मिलाये जाते हैं, इसलिए इन्हें जोड़ी के तार कहकर पुकारते हैं। सितार मिलाने के लिए सबसे पहले इन दो तारों को मिलाया जाता है, फिर बाद में अन्य तार मिलाये जाते हैं।

(४) सितार का चौथा तार लोहे का बना होता है जो पंचम का तार कहलाता है। इसे मन्द्र सप्तक के पंचम स्वर से मिलाया जाता है।

(५) सितार का पाँचवाँ तार पीतल का बना होता है परन्तु अन्य तारों से यह कुछ मोटा होता है। इसे अति मन्द्र सप्तक के पंचम स्वर से मिलाया जाता है। इसको भी 'पंचम का तार' अथवा 'लर्ज का तार' कहते हैं।

(६) सितार का छठा तार पतले फौलादी लोहे का बना होता है तथा 'चिकारी' अथवा 'पपैया का तार' कहलाता है। इसे मध्य सप्तक के षड्ज से मिलाया जाता है।

(७) सितार का सातवाँ तार भी पतले फौलादी लोहे का बना होता है। इसको भी 'चिकारी का तार' अथवा 'पपैया का तार' कहकर पुकारते हैं। इस तार को सप्तक के षड्ज स्वर से मिलाया जाता है। कुछ लोग इसे मध्य सप्तक के पंचम स्वर से भी मिलाते हैं, परन्तु तार सप्तक के षड्ज से मिलाने का अधिक प्रचार है।

सितार को मिलाते समय पहले जोड़ी के तारों को मिलाना चाहिए। इसके बाद बाज के तार को मिलाना चाहिए। बाज के तार के बाद पंचम के दोनों तारों को एक के बाद एक करके मिलाना चाहिए। इन दोनों तारों को मिलाने में इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि इनमें एक सप्तक का अन्तर होता है अर्थात् चौथा तार मन्द्र सप्तक के पंचम से मिलाया जाता है तथा पाँचवाँ पीतल का तार अतिमन्द्र सप्तक के पंचम स्वर से मिलाया जाता है। बाद में छठे और सातवें तार को क्रमशः उनके स्वरों में सावधानी से मिलाना चाहिए। ये दोनों तार अधिकतर झाला बजाने के काम आते हैं।

मिजराब-सितार बजाने के लिए लोहे के तार अथवा पीतल के मोटे तार का बना एक यन्त्र होता है जो सीधे हाथ की तर्जनी उँगली में पहना जाता है। सितार बजाने के लिए इस यन्त्र को उँगली में पहनकर तार पर प्रहार करते हैं, जिससे तार में कम्पन होता है और कम्पन से ध्वनि उत्पन्न होती है।

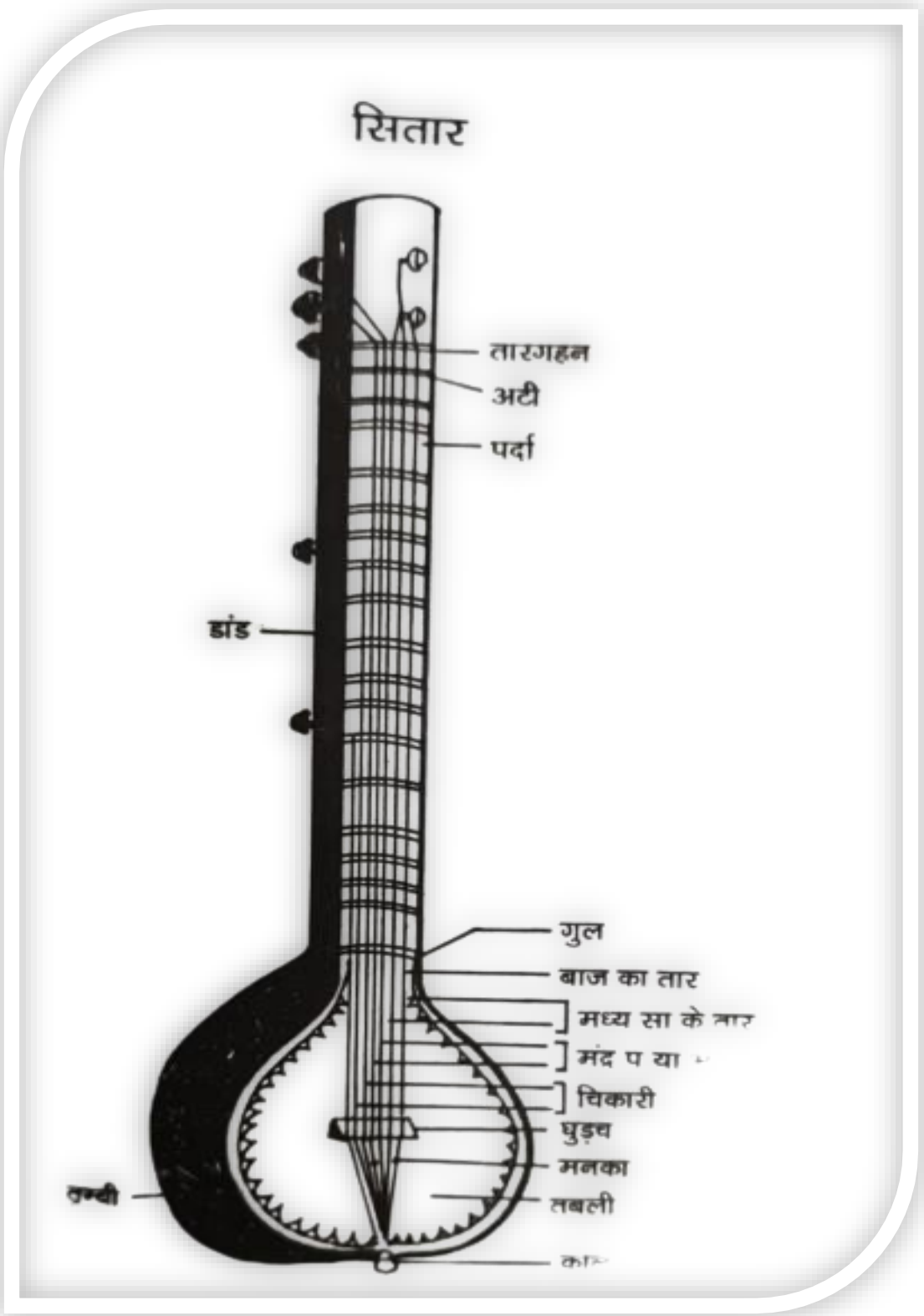
सितार
तारगहन
अटी
पर्दा
डांड
गुल
बाज का तार
मध्य सा के तार
मंद प या
चिकारी
घुड़च
मनका
तबली

मिजराब में तार पर प्रहार दो प्रकार से होता है। एक जब उँगली को तार पर पटकते हुए अपनी ओर लाना होता है जो आकर्ष प्रहार कहलाता है। इसमें 'दा' का बोल निकलता है। दूसरा प्रहार इसका उल्टा होता है, अर्थात् तार पर मिजराब का प्रहार करके उँगली को अपनी ओर से ले जाना होता है। इसे अपकर्ष प्रहार कहते हैं और 'ड़' का बोल निकलता है।

कहने का अर्थ यह हुआ कि सतार के तार को बजाने के लिए उँगली दो प्रकार से चलायी जाती है- एक ओर तो उँगली को अपनी ओर लाते हैं जिससे 'दा' का बोल निकलता है तथा दूसरे जब उँगली को अपनी ओर से दूसरी ओर ले जाते हैं- यह पहले का उल्टा होता है और इससे 'ड़' का बोल निकलता है। इन्हीं दोनों प्रहारों को क्रमशः 'आकर्ष' और 'अपकर्ष' प्रहार कहकर पुकारते हैं।

सितार में यही 'दा' और 'ड़ा' मुख्य दो बोल हैं। इन्हीं दोनों को मिलाने से 'दिड़' बनता है अर्थात् 'दा' और 'ड़ा' बोलों को मिलाने से एक तीसरा बोल 'दिड़' बनता है। बहुत-से लोग 'ड़ा' के बोल को 'रा' कहकर पुकारते हैं और इस प्रकार 'दाड़ा' की जगह 'दारा' कहते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6.1 सितार कैसा वाद्य है?

1) तत् वाद्य

2) सुषिर वाद्य

3) घन वाद्य

4) अवनद्ध वाद्य

6.2 सितार मे मुख्य कितनी तारें होती है?

1) 1 या 2

2) 3 या 5

3) 5 या 6

4) 6 या 7

6.3 सितार मे तरब की तारें कितनी होती है?

1) 11 से 13

2) 14 से 18

3) 15 से 17

4) कोई नहीं

6.4 सितार का पहला तार कौन सा होता है?

1) फौलादी लोहे का तार

2) चिकारी का तार

3) बाज का तार

4) अन्य

6.5 सितार का दूसरा तार कौन सा होता है?

1) जोड़े का तार

2) चिकारी का तार

3) फौलादी लोहे का तार

4) अन्य

6.6 गायकी अंग वाले सितार मे चौथा तार और पाँचवाँ खूंटी वाला तार कौन सा होता है?

1) स्टील का

2) गांधार निषाद का

3) लोहे का

4) गांधार पंचम का

6.7 सितार क छठी और सातवीं खूटी वाले तार किस नाम से जाने जाते है?

1) परज़ का तार

2) चिकारी का तार

3) लरज़ का तार

4) बाज का तार

6.8 सितार के जिस भाग से तारें कसी या ढीली की जाती है, उसे ..... कहते हैं।

1) परदा

2) अट्टी

3) खूंटी

4) अन्य

6.9 सितार के जिस भाग पर सारी तारें एकसाथ बंधी जाती है, उसे ..... कहते हैं।

1) परदा

2) अट्टी

3) खूंटी

4) लंगोट

6.4 सारांश

सितार भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सितार पर निरंतर अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे सितार पर अभ्यास से संगीतज्ञ के वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। सितार पर कोई भी राग और किसी भी तरह का संगीत बजाया जा सकता है।

6.5 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- ज्वारी (jwari): सितार का एक ऐसा हिस्सा जिसके ऊपर से होते हुए सभी तारें खूँटियों से लंगोट की तरफ जाती हैं, और ज्वारी से ही सितार की आवाज अपने मन के अनुसार कारीगर द्वारा बनवाई या रिपेयर की जाती है।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

6.1) उत्तर: 2

6.2) उत्तर: 4

6.3) उत्तर: 1

6.4) उत्तर: 3

6.5) उत्तर- 1

6.6) उत्तर: 4

6.7) उत्तर: 2

6.8) उत्तर: 3

6.9) उत्तर: 4

6.7 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

6.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. सितार वाद्य का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. सितार वाद्य का इतिहास लिखें।

प्रश्न 3. सितार वाद्य का संक्षिप्त परिचय और अंगों का विस्तार सहित वर्णन करें।

प्रश्न 4. सितार वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार सहित वर्णन करें।

प्रश्न 5. सितार वाद्य के अंगों का विस्तार सहित वर्णन सचित्र करें।

इकाई-7
तानपूरा

इकाई की रूपरेखा

7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य
7.3	तानपुरा परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.5	सारांश
7.6	शब्दावली
7.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.8	संदर्भ
7.9	अनुशंसित पठन
7.10	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, तानपूरा का परिचय एवं विस्तृत अध्ययन किया गया है।

किसी भी तरह के संगीत मे जितना महत्त्व गायन का है उतना ही वादन और वाद्य यंत्रों का रहता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तानपूरा भी एक ऐसा ही वाद्य यंत्र है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत मे आधार स्वर के लिए प्रयोग किया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण का अभ्यास किया जाता है। वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण के अभ्यास से गायन मे परिपक्क्वता और वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है। इस सभी गायकी के अंगों के साथ अगर कलाकार को तानपुरे पर निरंतर स्वर मिलता रहे तो कलाकार को सुर गाने या वाद्य यंत्र बजाने मे सहायता मिलती रहेगी जिससे श्रोता भी प्रस्तुति का आनंद लेते रहेंगे।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तानपूरा विषय का अर्थ परिभाषा इनके अंगों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही तानपुरा विषय के अध्ययन के माध्यम से अपने गायन और वादन मे रणपुर का प्रयोग कर मधुरता ला सकेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- तानपूरा विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- तानपूरा का इतिहास समझ सकेंगे।
- तानपूरा वाद्य यंत्र मे निरंतर बदलाव को समझ सकेंगे।
- तानपूरा का अंगों को समझ सकेंगे।

- तानपूरा को बजने का तरीका समझ पाएंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से तानपूरा वाद्य यंत्र के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

7.3 तानपूरा परिचय

भारतीय संगीत में अनेक प्रकार के वाद्य प्रचलित हैं। जैसे-सितार, तानपूरा, हारमोनियम, बेला, वीणा, सारंगी, इसराज, सरोद, तबला, पखावज, बाँसुरी, ढोलक इत्यादि । आधुनिक प्रचलित वाद्यों में से कुछ तो ऐसे हैं जो दूसरे देशों के हैं, लेकिन उन्हें हम लोगों ने अपना लिया है। जैसे- हारमोनियम, बेला, क्लोरोनेट इत्यादि तथा अन्य वाद्य भारतीय हैं। मुख्य रूप से हम इन वाद्यों को दो भागों में बाँट सकते हैं जिनसे स्वरों की उत्पत्ति होती है। जैसे- सितार, बेला, वीणा, हारमोनियम, सारंगी, बाँसुरी इत्यादि । ताल-वाद्य वे हैं जिनसे ताल की उत्पत्ति होती है, जैसे- तबला, मृदंग, पखावज, मॅजीरा, ढोलक इत्यादि ।

तानपूरा - भारतीय संगीत में स्वर देने के लिए प्रमुख वाद्य का नाम तानपूरा है । तानपूरे को तम्बूरा, तानपूरा आदि नामों से भी पुकारा जाता है। तानपूरे का नाम उसके आविष्कार करनेवाले तुम्बरू नामक गन्धर्व पर ही पड़ा । तार-वाद्य होने के कारण गायन अथवा वादन में स्वर देने के लिए इसको सर्वोत्तम मानते हैं। नीचे इस वाद्य के विभिन्न अंगों को दिया जाता है :-

तूम्बा-लौकी अथवा कद्दू का बना गोलाकार बड़ा भाग तूम्बा कहलाता है।

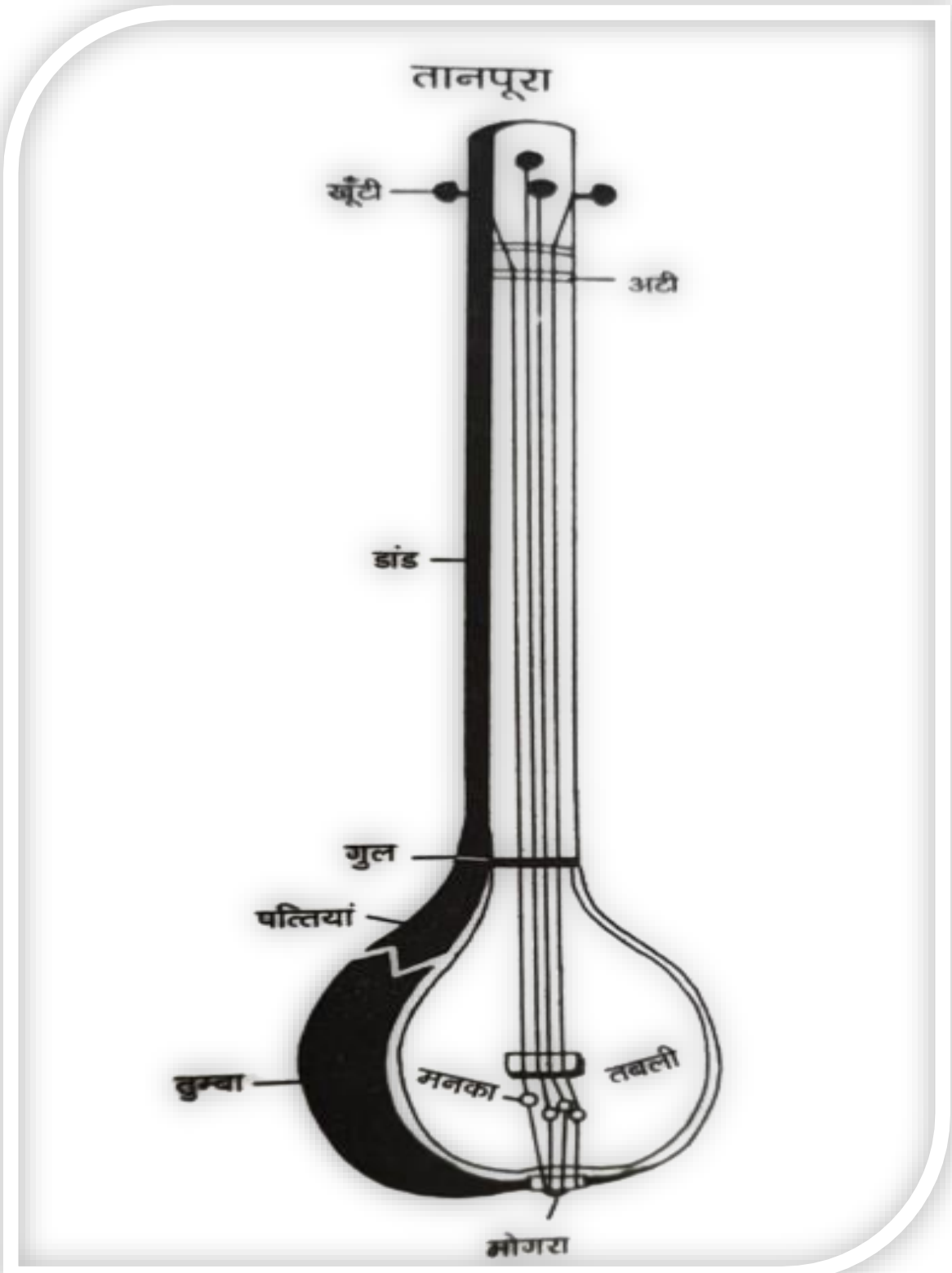
तानपूरा
खूँटी
अटी
डांड
गुल
पत्तियां
तुम्बा
मनका
तबली
मोगरा

तबली-तूम्बे को ढँकने के लिए पतली लकड़ी का जो ढक्कन होता है जिस पर घुरच आदि रखे जाते हैं, तबली कहलाती है।

घुरच-तबली के ऊपर लकड़ी अथवा हड्डी की एक चौकी "होती है जिस पर तार रखे जाते हैं, वह घुरच (Bridge) कहलाती है।

कील या लँगोट-तूम्बे के सिर पर तारों को बाँधने का प्रबन्ध होता है। कभी तो लकड़ी की एक कील लगा दी जाती है और कभी लकड़ी में चार छिद्र कर दिये जाते हैं। इस स्थान को कील या लँगोट कहते हैं।

डाँड-तुम्बे के बाद जो लम्बा भाग तानपूरे का होता है, जिसमें खूंटियाँ आदि होती है, डाँड कहलाता है। यह भाग अन्दर से खोखला बना रहता है।

गुलू-तूम्बे और डाँड से जोड़ने के स्थान को गुलू कहते हैं।

अटी और तारगहन-खूंटियों के पास हड्डी की दो पट्टियाँ लगी रहती हैं जिन पर तार आधारित होते हैं। इन दोनों पट्टियों में से जिस पट्टी पर तार रखे रहते हैं, उसे अटी कहते हैं और जिस पट्टी में से तार पिरोये जाते हैं वह तारगहन अथवा तारदान कहलाती है।

खूँटियाँ-तानपूरे के अटी और तारगहन के पीछे चार खुटियाँ होती है जिनमें तार कसे रहते हैं। इन खूंटियों के द्वारा ही तारों को कसा अथवा ढीला किया जाता है।

सिरा-अटी तारगहन के बाद तानपूरे का वह भाग जिसमें चार खूंटियाँ होती हैं, सिरा कहलाता है।

मनका-घुरच (Bridge) तथा कील के बीच तारों में मोती पड़े रहते हैं जो हाथी के दाँत, हड्डी अथवा काँच के होते हैं। इन मोतियों से तार को स्वर मिलाने में सहायता मिलती है। इन्हें मनका अथवा गुरिया कहकर पुकारते हैं।

तार-तानपूरे में चार तार होते हैं। इनमें से तीन फौलादी लोहे के होते हैं तथा एक पीतल का मोटा तार होता है। किसी-किसी तानपूरे में पीतल के दो तार होते हैं- एक मोटा और एक पतला। ये चारों तार कील अथवा लँगोट में बाँधे जाते हैं तथा घुरच के ऊपर से जाकर अटी और तारगहन में से होकर खूंटियों में लपेटे जाते हैं।

सूत का धागा घुरच पर तारों के नीचे सूत लगा रहता है। सूत के कारण ही तार में झनकार होती है। तार में झनकार उत्पन्न करने को जवारी खोलना कहते हैं।

तानपूरे के तारों को मिलाना तानपूरे में चार तार होते हैं- पहला तार फौलादी लोहे का होता है। कभी-कभी मर्दाने तानपूरे का पहला तार पीतल का होता है। इस तार को 'पञ्चम का तार' कहते हैं तथा इसे मन्द्र सप्तक के पंचम स्वर से मिलाते हैं। जिस राग में पंचम स्वर वर्जित होता है जैसे-मालकौंस उसमें इस तार को मन्द्र सप्तक के शुद्ध मध्यम स्वर से मिलाते हैं। तानपूरा मिलाने के लिए सर्वप्रथम बीच के दो तारों को गायक अपने गले के स्वर (षड्ज) से मिलाता है। चौथा तार मोटे पीतल का होता है, उसे मन्द्र सप्तक के षड्ज से मिलाया जाता है। चूँकि यह मन्द्र के षड्ज से मिलाया जाता है, इसलिए इसे 'खरज का तार' भी कहकर पुकारते हैं।

तानपूरे के पहले अर्थात् पंचम के तार को मध्यमांगुली से तथा बाकी के तीन तारों को तर्जनी अँगुली से बजाया जाता है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

7.1 तानपूरा कैसा वाद्य है?

1) तत् वाद्य

2) सुषिर वाद्य

3) घन वाद्य

4) अवनद्ध वाद्य

7.2 अधिकतर महिला तानपूरा कितनी तारें होती है?

1) 1

2) 3

3) 5

4) 4

2 9

7.3 अधिकतर पुरुष तानपूरा कितनी तारें होती है?

1) 1

2) 3

3) 5

4) 4

7.4 अधिकतर तानपुरे का पहला तार कौन सा होता है?

1) बाज का तार

2) चिकारी का तार

3) फौलादी लोहे का तार

4) अन्य

7.5 कभी-कभार मर्दाना तानपुरे का पहला तार कौन सा होता है?

1) पीतल का तार

2) चिकारी का तार

3) फौलादी लोहे का तार

4) अन्य

7.6 तानपुरे का चौथा तार कौन सी धातु का होता है?

1) स्टील का

2) फौलादी लोहे का

3) लोहे का

4) पीतल धातु

7.7 तानपुरे का चौथा तार किस नाम से जाना जाता है?

1) परज़ का तार

2) खरज़ का तार

3) लरज़ का तार

4) बाज का तार

7.8 तानपुरे के जिस भाग पर से तारें कसी या ढीली की जाती है, उसे ..... कहते हैं।

1) परदा

2) अट्टी

3) खूंटी

4) अन्य

7.4 सारांश

तानपूरा विषय भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इनके साथ अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं।

7.5 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।

- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

7.1) उत्तर: 2

7.2) उत्तर: 4

7.3) उत्तर: 4

7.4) उत्तर: 3

7.5) उत्तर- 1

7.6) उत्तर: 4

7.7) उत्तर: 2

7.8) उत्तर: 3

7.7 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

7.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1 तानपूरा विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. तानपूरा वाद्य यंत्र के ऐतिहासिक पक्ष पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 3 तानपूरा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 4. तानपूरा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का वर्णन करें।

प्रश्न 5 तानपूरा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का सचित्र वर्णन करें।

प्रश्न 6 तानपूरा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके किन्हीं 10 अंगों का सचित्र वर्णन करें।

प्रश्न 7 तानपूरा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके किन्हीं 12 अंगों का सचित्र वर्णन करें।

इकाई-8
नाद

इकाई की रूपरेखा

8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य
8.3	नाद परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	सारांश
8.5	शब्दावली
8.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.7	संदर्भ
8.8	अनुशंसित पठन
8.9	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, नाद का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए नाद को समझा जाता है। नाद का अध्ययन गूढ़ता से करने पर कलाकार संगीत की बारीकियों को अच्छे ढंग से समझ सकेगा और अपने जीवन मे आत्मसात कर सकेगा।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी नाद विषय का अर्थ परिभाषा और नाद के प्रकार और रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही गायन तथा सितार वादन पर नाद के प्रकारों के अभ्यास से अपने गायन और वादन मे मधुरता ला सकेंगे।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- नाद विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- नियमित और अनियमित आंदोलनों का अर्थ समझ सकेंगे।
- नाद के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।
- नाद के विभिन्न प्रकारों और भेदों को विस्तार से समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल नाद के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

8.3 नाद परिचय

संगीत का सम्बन्ध ध्वनि अथवा आवाज से होता है। परन्तु ध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं- एक मधुर तथा दूसरी कर्कश। मधुर ध्वनि वह है जो कानों को सुनने में अच्छी लगती है तथा जिसको सुनने में प्रसन्नता होती है। कर्कश ध्वनि वह है जो कानों को अप्रिय मालूम पड़ती है तथा जिसे सुनकर प्रसन्नता नहीं होती । ऐसी ध्वनि को कोलाहल या शोर-गुल आदि भी कहते हैं। संगीत का सम्बन्ध मधुर ध्वनि से है।

आन्दोलन ध्वनि की उत्पत्ति कम्पन अथवा आन्दोलन (Vibration) से होती है। साधारणतः जब किसी वाद्य के तार को छेड़ा जाता है तो उससे कम्पन अथवा आन्दोलन उत्पन्न होता है, जिससे ध्वनि संचारित होती है। तार को छेड़ने से वह एक ओर कुछ दूरी तक जाता है फिर लौटकर उतना ही दूसरी ओर जाता है। बाद में वह अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है। परन्तु अपने स्थान पर आकर रुकता नहीं है, बल्कि क्रमशः इस प्रकार ऊपर-नीचे होकर कम्पन करता रहता है। यह कम्पन तब तक होता रहता है जब तक तार का वेग शान्त नहीं होता तथा जब तक अपने स्थान से एक ओर जाकर तथा फिर दूसरी ओर आकर अपने पूर्व स्थान पर नहीं लौटता तब तक इस प्रकार वह एक आन्दोलन करता है। इन आन्दोलनों का क्रम चलता रहता है, परन्तु जब तार पर किये गये प्रहार की शक्ति कम हो जाती है, तब तार के ऊपर-नीचे आने-जाने की दूरी भी कम होती जाती है और अन्त में तार शान्त हो जाता है। तार में कम्पन शान्त होने से उसकी ध्वनि भी शान्त हो जाती है। विद्वानों ने इन आन्दोलनों को नापने का प्रयत्न किया है और उनके नापने का मापदण्ड सेकेण्ड तक रखा है। एक सेकेण्ड में आन्दोलनों की संख्या जितनी कम होगी, ध्वनि उतनी ही नीची होगी तथा एक सेकेण्ड में आन्दोलनों की संख्या जितनी अधिक होगी, ध्वनि उतनी ही ऊँची होगी।

नाद-आन्दोलनों को देखते हुए ध्वनि दो प्रकार की हो सकती है।

(1) वह ध्वनि जिसमें कम्पन आन्दोलन (Vibration) नियमित होते हैं तथा सुनने में कानों को प्रिय लगती है।

(2) वह ध्वनि जिसमें कम्पन या आन्दोलन अनियमित होते हैं तथा जो सुनने में कानों को अप्रिय मालूम पड़ती है। ऐसी ध्वनि संगीत के काम की नहीं होती ।

संगीत का सम्बन्ध मधुर ध्वनि से है जिसमें नियमित आन्दोलन होते हैं। वह ध्वनि जो संगीत में प्रयोग की जाती है 'नाद' कहलाती है। कहने का अर्थ यह हुआ कि संगीतोपयोगी ध्वनि को नाद कहते हैं। नाद ही संगीत का आधार है।

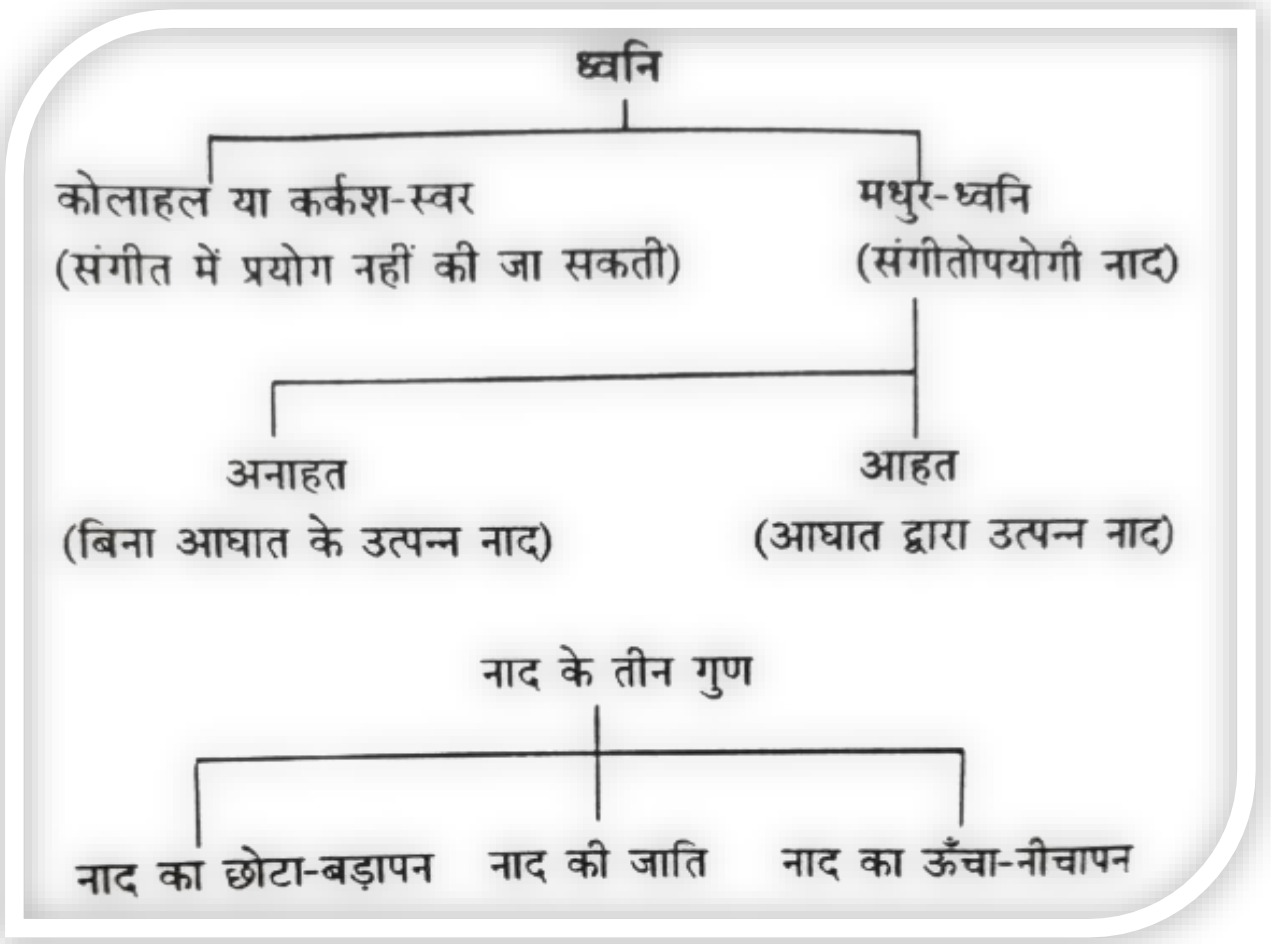

नाद के दो भेद हैं- (1) अनाहत नाद (2) आहत नाद।

अनाहत नाद-जो बिना किसी आघात के उत्पन्न होता है तथा साधारणतः सुनायी नहीं पड़ता, अनाहत नाद कहलाता है। इसे सूक्ष्म या गुप्त नाद भी कहते हैं। सिद्ध लोग इसकी साधना करके मोक्ष की प्राप्ति करते हैं। अनाहत नाद का देशी अथवा अपने संगीत से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह नाद तो स्वयं उत्पन्न होता है। इसका प्रयोग देवताओं के संगीत के लिए होता है।

आहत नाद-जो नाद किसी आघात द्वारा उत्पन्न होता है उसे आहत नाद कहते हैं। देशी अथवा प्रचलित संगीत में इसी नाद का प्रयोग होता है। यह नाद तीन प्रकार से उत्पन्न हो सकता है।

(1) किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर आघात होने से, जैसे-तबले पर जब हाथ का आघात होता है, तब ध्वनि उत्पन्न होती है।

(2) किन्हीं दो वस्तुओं के आपस में रगड़ने से, जैसे सारंगी अथवा बेले पर गज रगड़ा जाता है, तब ध्वनि उत्पन्न होती है।

(3) किसी वस्तु में जब हवा का प्रयोग होता है अथवा जब हवा भरी या निकाली जाती है, जैसे- बाँसुरी या बीन में हवा भरने से ध्वनि उत्पन्न होती है। इसी प्रकार कण्ठ में भी वायु के प्रवेश से कण्ठ की स्वर-तन्त्रियाँ कम्पित होती हैं और ध्वनि उत्पन्न होती है।

ध्वनि के लिए मुख्य तीन बातों की आवश्यकता है-

1. नाद का छोटा-बड़ापन (Magnitude)

एक ही नाद धीमा व तेज हो सकता है। नाद का वह गुण नाद को उत्पन्न करने पर निर्भर है क्योंकि जब एक-एक नाद धीमे से उत्पन्न किया जायगा तब वह कम सुनायी पड़ेगा तथा वही नाद जब जोर से उत्पन्न किया जायगा तब दूर तक सुनायी पड़ेगा। जब नाद धीमे से उत्पन्न होता है तो उसे नाद का छोटापन कहते हैं तथा जब नाद जोर से उत्पन्न होता है तब उसे नाद का बड़ापन कहते हैं। उदाहरण के लिए-यदि 'सा' को हम धीरे से उत्पन्न करें तो उसे पास के ही लोग सुन सकते हैं। परन्तु जब उसे जोर से उत्पन्न किया जाय तो दूर के लोग भी सुन सकते हैं। यह गुण नाद का छोटा-बड़ापन कहलाता है।

2. नाद की जाति (Timber)

नाद का यह गुण बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। नाद के इस गुण से हमें यह मालूम होता है कि जो नाद उत्पन्न हो रहा है वह किसी वस्तु अथवा वाद्य का है। कहने का अर्थ यह है कि नाद के उत्पन्न होने पर हम केवल उसे सुनकर कह सकते हैं कि यह नाद अमुक वाद्य अथवा किसी परिचित कण्ठ से उत्पन्न हो रहा है। नाद के इस गुण को नाद की जाति कहते हैं।

उत्पन्न नाद की जाति इसी गुण के द्वारा मालूम होती है। उदाहरण के लिए कई वाद्यों के एक साथ बजने पर हम बिना देखे कह सकते हैं कि अमुक ध्वनि सारंगी की है तथा अमुक ध्वनि तबले की है। यहाँ तक होता है कि रिकार्ड आदि बजने पर हम गानेवाले का नाम जान सकते हैं। नाद का यही गुण नाद की जाति कहलाता है।

3. नाद का ऊँचा-नीचापन (Pitch)

प्रत्येक नाद दूसरे नाद से ऊँचा अथवा नीचा होता है जैसे 'सा' से ऊँचा 'रे' है तथा 'रे' से नीचा 'सा' है। जब एक नाद दूसरे नाद से ऊँचा होता है तब उसे नाद का ऊँचापन तथा जब एक नाद दूसरे नाद से नीचा होता है तब उसे नाद का. नीचापन कहते हैं। नाद का ऊँचा-नीचापन नाद से उत्पन्न होनेवाली एक सेकेण्ड की आन्दोलन संख्याओं पर निर्भर होता है। एक सेकेण्ड में नाद की आन्दोलन संख्या जितनी अधिक होगी, नाद उतना ही ऊँचा होगा तथा एक सेकेण्ड में नाद की आन्दोलन संख्या जितनी कम होगी नाद उतना ही नीचा होगा। उदाहरण के लिए मध्यम स्वर की आन्दोलन संख्या गान्धार स्वर की आन्दोलन संख्या से अधिक है। इसलिए मध्यम स्वर गान्धार स्वर से ऊँचा है तथा पंचम स्वर की आन्दोलन संख्या धैवत स्वर की आन्दोलन संख्या से कम है इसलिए पंचम स्वर धैवत स्वर से नीचा है। इसी तरह नाद ऊँचे-नीचे हुआ करते हैं। नाद के इस गुण को नाद का ऊँचा-नीचापन कहते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

8.1 नाद का भेद है?

1) शंकरा नाद

2) आहत नाद

3) विलंबित नाद

4) कोई नहीं

8.2 नाद का भेद है?

1) तीव्र नाद

2) भैरवी नाद

3) अनाहत नाद

4) कोई नहीं

8.3 दो वस्तुओं के आपसी टकराव से उत्पन्न ध्वनि कहलाती है?

1) कोलाहल

2) अनाहत नाद

3) आहात नाद

4) कोई नहीं

8.4 बिना आघात से उत्पन्न ध्वनि को क्या कहते हैं?

1) तार नाद

2) अनाहत नाद

3) स्वर

4) कोई नहीं

8.5 किसी गायक को देखे बिना उसकी आवाज सुनकर उसे पहचानना नाद का कौन स प्रकार है?

1) नाद की जाति

2) नाद का ऊँचा नीचापन

3) नाद का छोटा बड़ापन

4) कोई नहीं

8.6 सा से ऊंचा रे और रे से ऊंचा ग ये नाद का कौन सा प्रकार है?

1) नाद की जाति

2) नाद का ऊँचा नीचापन

3) नाद का छोटा बड़ापन

4) कोई नहीं

8.4 सारांश

नाद विषय भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नाद के अध्ययन से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं तथा साथ ही आश्रय राग के अध्ययन से किन्हीं भी दो या इससे अधिक रागों के बीच अंतर जानने योग्य होगा। शास्त्रीय संगीत मे गमक अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

8.5 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

8.1) उत्तर: 2

8.2) उत्तर: 3

8.3) उत्तर: 3

8.4) उत्तर: 2

8.5) उत्तर: 5

8.6) उत्तर: 2

8.7 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

8.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. नाद विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. नाद मे नियमित और अनियमित अंडोनलों का अर्थ विस्तार और उदाहरण सहित लिखें।

प्रश्न 3. नाद का अर्थ परिभाषा और इसके भेदों के नाम विस्तार सहित लिखें।

प्रश्न 4. नाद का अर्थ परिभाषा और इसके प्रकारों के नाम विस्तार सहित लिखें।

प्रश्न 5. नाद का अर्थ परिभाषा और इसके भेदों तथा प्रकारों के नाम विस्तार सहित लिखें।

इकाई-9
हारमोनियम

इकाई की रूपरेखा

9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य
9.3	हारमोनियम परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

91 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह नौवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, हारमोनियम वाद्य का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। वर्तमान समय मे ऐसा कोई भी प्राणी नहीं होगा जो हारमोनियम वाद्य से परिचित न होगा। हारमोनियम वाद्य आज के संगीत और समय की एक प्रमुख मांग बन चुका है। आज के समय मे हारमोनियम वाद्य के बिना हर कोई संगीत कार्यक्रम अधूरा सा प्रतीत होता है। फिर चाहे बात शास्त्रीय संगीत हो या सुगम संगीत की। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार राग या सुगम संगीत मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं तो उनके साथ संगत के लिए हारमोनियम वाद्य का प्रयोग किया जाता है जो कलाकार की प्रस्तुति मे चार चाँद लगा देता है। आज हारमोनियम संगत के रूप मे तो बजाया ही जाता है लेकिन उतना ही स्थान आज इसे एकल वाद्य के रूप मे भी है। इस वाद्य पर कलाकार निरंतर अभ्यास कर संगीत में वैचित्र्य उत्पन्न करता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी हारमोनियम विषय का अर्थ परिभाषा और हारमोनियम के अंगों एवं रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही हारमोनियम वादन पर रागों के अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात हारमोनियम के साथ सही व्यवहार करने मे समर्थ हो सकेंगे।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- हारमोनियम वाद्य का अर्थ समझ सकेंगे।
- हारमोनियम के ऐतिहासिक पक्ष को समझ सकेंगे।
- हारमोनियम के अंगों का विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे।
- हारमोनियम वाद्य के अंगों के आधार पर इसे सुर मे करना सीख सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल हारमोनियम वाद्य के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

9.3 हारमोनियम परिचय

आज हारमोनियम भारतीय संगीत में प्रयोग होने वाला एक लोकप्रिय वाद्य है। यह वाद्य अनेक वर्षों से प्रयोग होता आ रहा है तथा जिस भी घर में संगीत के प्रति लगाव देखा गया है वहाँ प्रायः यह वाद्य देखा जा सकता है। यह वाद्य भाास्त्रीय संगीत, उप भाास्त्रीय संगीत, गजल, भजन आदि के साथ संगत के लिए प्रयोग किया जाता है। इसके साथ-साथ यह वाद्य बहुत से संगीतकारों के गायन-वादन का सहायक संगत वाद्य माना जाता है। इसके अतिरिक्त जो गीतकार अथवा संगीत रचनाकार नई-नई धुनों का निर्माण करते हैं उनके लिए भी यह वाद्य अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है। इस वाद्य में इतने गुण होते हुए भी यह वाद्य भारतीय संगीत में सदैव चर्चा का विशय बना रहा है।

यह एक ऐसा वाद्य है जिसका इतिहास बहुत मिला जुला रहा है। कुछ संगीत विद्वानों का कहना है कि यह एक ऐसा वाद्य है जिसमें भाास्त्रीय संगीत में प्रयोग होने वाली बारीकियों जैसे मींड, गमक इत्यादि को प्रदर्शित नही किया जा सकता, जो कि भारतीय संगीत की आत्मा मानी जाती हैं। संगीत के क्षेत्र में एक समय ऐसा आया था जब कुछ संगीत विद्वानों ने इस वाद्य का पूर्ण रूप से निषेध किया था। लेकिन वर्तमान समय में यह वाद्य बहुत ही रोचक और लोकप्रिय वाद्य माना जाता है। इस वाद्य का विकास धीरे-धीरे हुआ और कई उत्तार-चढ़ाव आने के बाद आज यह वाद्य एक महवपूर्ण वाद्य बन गया है। यही नही आज बहुत से संगीतकारों ने इस वाद्य को एकल वाद्य वादन के रूप में स्वीकार किया है और उन्होंने इस वाद्य के उत्थान के लिए कार्य भी किए हैं।

इस वाद्य की उत्पत्ति कब और कैसे हुई इसके विशय में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। विद्वानों का ये कहना है कि इस वाद्य की उत्पत्ति 19वीं माताब्दी में फ्रांस में हुई। कहा जाता है कि 19वीं भाताब्दी के उत्तार्ध में यह वाद्य अंग्रेजों के द्वारा भारत लाया गया क्यों कि उस समय भारत पर अंग्रेजों का भाासन था। उस समय इस वाद्य का प्रयोग मंच प्रदर्शन में

गायन-वादन तथा भजन-कीर्तन आदि की संगत के लिए किया जाने लगा। इसके प" चात् धीरे-धीरे भाास्त्रीय संगीत की संगत के लिए भी इस वाद्य हारमोनियम का प्रयोग किया जाने लगा।

मुख्यतः यह वाद्य यूरोपियन हारमोनियम वाद्य की तरह लगता है, जिसे दोनों पैरों से हिला कर तथा हवा भर कर बजाया जाता था। इस वाद्य के वादन के लिए वादक कुर्सी पर बैठ कर दोनों हाथों से इसे बजाया करता था। लेकिन जब उस वाद्य का प्रयोग भारतीय संगीत में होने लगा तब, क्योंकि भारतीय संगीत में बैठ कर गाने-बजाने की परम्परा रही है, अतः यह वाद्य बड़े आकार से छोटे आकार में परिवर्तित हुआ और अब इसको नीचे बैठ कर बजाया जाने लगा। जिसमें बांये हाथ के द्वारा इस वाद्य की धौंकनी को हिलाकर हवा भरी जाने लगी तथा दांये हाथ से इसके स्वरों की पट्टियों दबा कर इसका वादन किया जाने लगा।

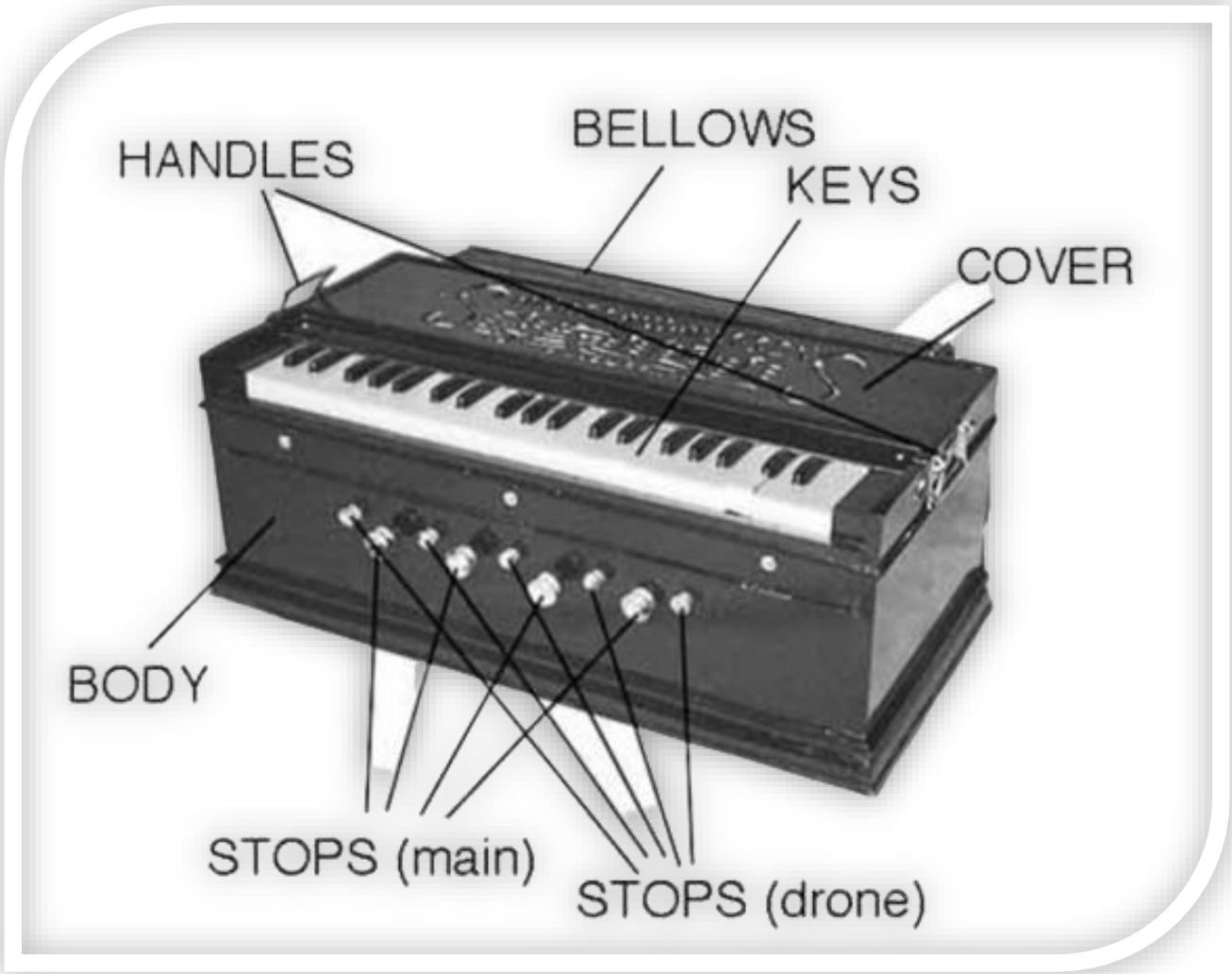

धीरे-धीरे इस वाद्य ने भारतीय संगीत में अपना एक स्थान बना लिया।तत्पश्चात लगभग 1925 में यह वाद्य भारत में निर्मित होने लगा। लेकिन सन् 1940 के बाद ही यह वाद्य बाजार में उपलबध होने लगा। हारमोनियम बनाने वालों में श्री एच० पी० भगत का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आज भी उनके बनाए हारमोनियम का कोई सानी नहीं है।

हारमोनियम वाद्य मुख्य रूप से संगत वाद्य के रूप में ही जाना जाता है। पिछले कुछ वर्षों से हमारे कई महान संगीतज्ञों ने इस वाद्य के विकास एवं प्रचार-प्रसार में विश योगदान दिया है। आज यह वाद्य संगत वाद्य के अतिरिक्त एकल वादन वाद्य के रूप में भी प्रचलित है। इस वाद्य को एकल वाद्य (Solo Instrument) के रूप में प्रचलित करने का मुख्य श्रेय पं० गोविन्दराव टैम्बे को जाता है।

हारमोनियम को आज स्वरपेटी, पेटी, बाजा आदि नामों से भी जाना जाता है। हारमोनियम मुख्य रूप से तीन-साढे तीन सप्तक तक का होता है। इसके एक सप्तक में 12 स्वर होते हैं जिनमें सात भाद्ध और पाँच विकृत स्वर होते हैं। इस लिए इस वाद्य में श्रुति का काम नही हो पाता। जिसके कारण कुछ ऐसे राग हैं जो हारमोनियम पर नहीं बजाए जा सकते जैसे उदाहरण के लिए मियां मल्हार, दरबारी कानड़ा, बहार इत्यादि क्यों कि इन रागों में गांधार का प्रयोग एक अलग प्रकार से किया जाता है जो कि हारमोनियम पर सम्भव नहीं होता। यही कारण है कुछ संगीतज्ञ इस वाद्य को निम्न कोटी का समझते हैं और अच्छे संगीत के लिए इसके प्रयोग को स्वीकार नहीं करते। लेकिन जो भी हो आज यह वाद्य हमारे संगीत में अपना विवेश स्थान बना चुका है।

हारमोनियम वाद्य के विभिन्न भाग होते हैं जो इस प्रकार है:-

1. शरीर - यह हारमोनियम का मुख्य भाग होता है। जिसमें इस वाद्य के सम्पूर्ण भाग समाए होते हैं।

2. धौंकनी यह हारमोनियम का वह भाग होता है जिससे इस वाद्य में हवा भरी जाती है। धौंकनी संख्या में दो होती हैं। एक इस वाद्य के अन्दर की ओर तथा दूसरी भारीर के बाहर होती है।

3. चाबियाँ (KEYS):- ये लकड़ी की बनी होती हैं, जिनको दबाने से स्वर उत्पन्न होते हैं। ये स्वर की चाबियाँ काले और सफेद रंग की होती हैं।

4. Top Key:- ये हारमोनियम के भारीर में सामने की ओर लगे होते हैं। इनके द्वारा हवा के प्रवाह को रोका व खोला जाता है। ये दो प्रकार की होती हैं- Main Stopper or Drone I

5. Reeds:- ये धातु के बने होते हैं और स्वर उत्पत्ति का कार्य करते हैं। जब इसमें हवा भरी जाती है तब इन रीड्ज़ में कम्पन्न होता है जिसके द्वारा स्वर की उत्पत्ति होती है।

6. Cover:- यह एक प्रकार का ढक्कन।

होता है जो चाबियों के पीछे लगे रीड्ज के बाहरी भाग को ढकने का काम करता है। इसके ढकने से इस वाद्य की ध्वनि में अन्तर आता है।

इस प्रकार यह वाद्य विदेशी होते हुए भी आज हमारे संगीत का अभिन्न अंग बन गया है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

9.1 हारमोनियम को एकल वाद्य के रूप मे प्रचलित करने का श्रेय किसे जाता है?

1) पंडित जयदेव

2) विदुषी गिरिजा देवी

3) पंडित गोविंडएआओ टैम्बे

4) कोई नहीं

9.2 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) धौंकनी

2) चिकारी

3) बाज

4) कोई नहीं

9.3 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) पंचम की तार

2) चिकारी

3) रीड

4) कोई नहीं

9.4 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) पंचम की तार

2) चिकारी

3) तुम्बा

4) कोई नहीं

9.5 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) Keys (चाबियाँ)

2) चिकारी

3) तुम्बा

4) कोई नहीं

9.6 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) लंगोट

2) चिकारी

3) Bellows

4) कोई नहीं

9.4 सारांश

हारमोनियम भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सितार पर निरंतर अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे सितार पर अभ्यास से संगीतज्ञ के वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। सितार पर कोई भी राग और किसी भी तरह का संगीत बजाया जा सकता है।

9.5 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- शरीर (Body): हारमोनियम के बाहरी भाग को शरीर या Body कहा जाता है।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

9.1) उत्तर: 3

9.2) उत्तर: 1

9.3) उत्तर: 3

9.4) उत्तर: 4

9.5) उत्तर: 1

9.6) उत्तर: 3

9.7 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

9.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. हारमोनियम वाद्य का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. हारमोनियम वाद्य का इतिहास लिखें।

प्रश्न 3 हारमोनियम वाद्य का संक्षिप्त परिचय और अंगों का विस्तार सहित वर्णन करें।

प्रश्न 4. हारमोनियम का वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

प्रश्न 5. हारमोनियम वाद्य के अंगों का विस्तार सहित वर्णन सचित्र करें।

इकाई-10
तबला

इकाई की रूपरेखा

10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य
10.3	तबला परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	सारांश
10.5	शब्दावली
10.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7	संदर्भ
10.8	अनुशंसित पठन
10.9	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह दसवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, तबला वाद्य का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। वर्तमान समय मे ऐसा कोई भी प्राणी नहीं होगा जो तबला वाद्य से परिचित न होगा। तबला वाद्य आज के संगीत और समय की एक प्रमुख मांग बन चुका है। आज के समय मे तबला वाद्य के बिना हर कोई संगीत कार्यक्रम अधूरा सा प्रतीत होता है। फिर चाहे बात शास्त्रीय संगीत हो या सुगम संगीत की। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार राग या सुगम संगीत मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं तो उनके साथ संगत के लिए तबला वाद्य का प्रयोग किया जाता है जो कलाकार की प्रस्तुति मे चार चाँद लगा देता है। आज तबला संगत के रूप मे तो बजाया ही जाता है लेकिन उतना ही स्थान आज इसे एकल वाद्य के रूप मे भी है। इस वाद्य पर कलाकार निरंतर अभ्यास कर संगीत में वैचित्र्य उत्पन्न करता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तबला विषय का अर्थ परिभाषा और तबला के अंगों एवं रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही तबला वादन पर रागों के अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात तबला के साथ सही व्यवहार करने मे समर्थ हो सकेंगे।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- तबला वाद्य का अर्थ समझ सकेंगे।
- तबला के ऐतिहासिक पक्ष को समझ सकेंगे।
- तबला के अंगों का विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे।
- तबला वाद्य के अंगों के आधार पर इसे सुर मे करना सीख सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल तबला वाद्य के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

10.3 तबला परिचय

भारतीय संगीत में तीन अंग चला आया है। कुछ वाद्य ऐसे हैं, गायन, वादन, नृत्य हैं। संगीत में वाद्यों का प्रयोग होता जिनमें स्वर की प्रधानता रहती है और कुछ वाद्य ऐसे हैं जिनमें लय की प्रधानता रहती है, जैसे : डमरू, झांझ, ढोलक, मृदंग तथा तबला आदि। संगीत में न जाने कब से लय अथवा ताल दिखाने वाले इन वाद्यों का प्रयोग होता आ रहा है। आज तो इनका इतना अधिक महत्व बढ़ गया है कि संगीत का कोई भी कार्यक्रम चाहे गायन, वादन अथवा नृत्य का हो इसके बिना अधूरा रहता है।

शास्त्रीय गायन की संगति के लिए आज से कुछ वर्षों पूर्व पखावज या मृदंग नामक वाद्य का स्थान सर्वोपरि था। वह युग ध्रुपद और धमार की गायकी का युग था। परन्तु समय के परिवर्तन के साथ-साथ गायकी में भी परिवर्तन हुआ और जैसे-जैसे ध्रुपद का स्थान ख़्याल ने लिया वैसे ही वैसे तबले ने पखावज का स्थान ग्रहण कर लिया। यह तो सर्वविदित है कि आज तबले का कितना अधिक प्रयोग होता है। इसका प्रयोग गायन, वादन तथा नृत्य की संगति में और स्वतन्त्र वादन में किया जाता है।

भारतीय संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य के साथ ताल सम्बन्धी वाद्यों का प्रयोग अत्यंत प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। उपलब्ध प्राचीन संगीत के इतिहास में हमें ताल संबंधी वाद्यों का प्रयोग कहीं-कहीं मिलता है। पौराणिक कथाओं में अनेक ताल-वाद्यों की चर्चा की गई है। प्राचीन काल के जिन ताल सम्बन्धी वाद्यों का उल्लेख मिलता है, उसमें आघाती, आडम्बर वानस्पति, भेरी, दुर्दुर, ढोल, नगाड़ा तथा मृदंग या पखावज आदि मुख्य हैं। पखावज का तो प्रयोग आज भी कभी-कभी देखने को मिलता है और ढोलक का प्रयोग उत्तर भारत के लोक गीतों के साथ किया जाता है। आधुनिक युग के ताल सम्बन्धी वाद्यों में सबसे प्रमुख स्थान तबले को प्राप्त है। इसकी उत्पत्ति के विषय में अनेक मत हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार प्राचीन काल के दुर्दुर नामक वाद्य का आधुनिक रूप बदला है। कुछ लोग तबले के जन्म का

सम्बन्ध फारस के वाद्य तव्ल से जोडते हैं। परन्तु अधिकांश विद्वानो का मत है कि तेरहवीं शताब्दी के बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी के राज्यकाल के प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो ने पखावज को दो भागों में विभाजित करके तबले को जन्म दिया। इस विचार को मानने व्यक्तियों का कथन है कि जिस प्रकार पखावज के बायें में आटा गूंथ कर लगाया जाता उसी प्रकार पंजाब में बहुत दिन तक तबले के बायें में आटा गूंथ कर लगाने की प्रथा थी।

तेरहवीं सदी में तथा उसके पूर्व ध्रुपद जैसे गम्भीर गायन का प्रचार था, जिसके ग पखावज का प्रयोग किया जाता है। परन्तु उसके पश्चात् उत्तर भारत में राज्य परिवर्तनहु मुगल बादशाहों के हाथ में शासन की बागडोर गई और धीरे-धीरे लोगों की मानसिक सामाजिक परिस्थितयों में परिवर्तन होने लगा। उसके प्रभाव से संगीत अछूता न रह सक जौनपुर के सुल्तान हुसैन शर्की ने बड़े ख़्याल को तथा अमीर खुसरो ने कव्वाली के आधार छोटे ख्याल को जन्म दिया, जो ध्रुपद गायन की अपेक्षा कहीं अधिक कोमल तथा मधुरग शैली थी। उसी नवीन गायकी के साथ पखावज़ जैसे गम्भीर तथा जोरदार वाद्य को बज जाना उपयुक्त न था। फलस्वरूप किसी मधुर ताल वाद्य की आवश्यकता पड़ी और सम्भवन उसी आवश्यकता ने तबले को जन्म दिया। हम देखते है कि ख़्याल गायकी और तबले लगभग साथ ही साथ जन्म लिया और प्रगति की।

तबले का जन्म किसी भी प्रकार हुआ हो, किन्तु इतना तो उपलब्ध इतिहास के अनुत्तात निश्चित है कि उसके वादन को आधुनिक रूप देने का श्रेय दिल्ली के प्रसिद्ध उस्ताद सिद्धार खाँ को है, जिन्होंने पखावज के बोलों को तबले पर बजाने के योग्य बनाया तथा उसके रूप में सुधार लाकर आधुनिक तबले का रूप देकर इसका प्रचार किया और दिल्ली के प्रतिङ घराने दिल्ली घराने की नींव डाली। उन्हीं की वंश परम्परा तथा शिष्य-परम्परा ने भारत तबले का प्रचार किया और वर्तमान घरानों की नींव डाली।

तबले के अंग

तबले को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।.

1 दाहिना या तबला- जिसे अधिकतर दाहिने हाथ से बजाया जाता है। यह प्रायः दस ग्यारह इंच ऊँचा तथा इसका मुंह पांच, छः इंच चौडा होता है।

2 बायां का डग्गा जिसे अधिकतर बायें हाथ से बजाया जाता है, और जो दाहिने तबले की अपेक्षा कम ऊँचा और चौड़े मुंह का होता है।

1 लकड़ी - दाहिने तबले का यह महत्वपूर्ण अंग है, जिस पर तबले और सब अंग स्थित रहते हैं। प्रायः दस या ग्यारह इंच ऊँचा, इसके नीचे का व्यास आठ या नौ इंच का तथा ऊपर का मुंह पांच या छः इंच का होता है। लकड़ी, अन्दर से खोखली होती है तथा अधिकतर आम, शीशम, नीम तथा कटहल की होती है। उसके लिये खैर या बिजयसाल की लकड़ी अच्छी समझी जाती है।

2 पूड़ी लकड़ी के मुंह पर मढे हुए चमड़े के सम्पूर्ण अंग को पूड़ी कहते हैं, जिसके अन्तर्गत स्याही, लव या चांटी, गजरा आदि आते हैं।

3 गजरा - पूड़ी के किनारे-किनारे चारों ओर चमड़े की एक गुंथी हुई चोटी को गजरा, श्रृंगार या पगड़ी कहते है। इसमें 16 छेद होते हैं, जिसे घर कहते है। इनमें दो बद्धी डालकर पूड़ीको लकड़ी के साथ कसा जाता है।

4 चांटी -पूड़ी के किनारे-किनारे तथा गजरे के बाद करीब आधा या पौना इंच चमड़े की एक गोट सी लगी रहती है, जिसे चांटी या किनार कहते हैं।

5 स्याही-पूड़ी के बीचो-बीच और चांटी के करीब एक या पौना इंच की दूरी पर गोल आन्द में काले रंग का मसाला लगा रहता है उसे स्याही, काली या मसाला कहते हैं।

6 लव-चांटी और स्याही के बीच के स्थान को लव कहते हैं।

7 बद्धी-गजरों के छिद्रों से जाने वाली चमडे की लम्बी डोर या पट्टी को बद्धी कहते उसी से पूड़ी लकड़ी से कसी जाती है।

8 गुडरी - तबले की पेंदी से चमड़े की पट्टी का एक छोटा घेरा होता है, जिसे बीच से ब लकडी पर पहनायी जाती है, उसे गुडरी कहते हैं।

तबले के अंग

9 गट्टा - दाहिने तबले में जो लकड़ी के गोल-गोल लम्बे टुकड़े बद्धी के नीचे कसे होते हैं. गट्टे कहलाते हैं। इनकी संख्या आठ होती है। इनसे तबले को उतारने और चढाने में सहायता मिलती है। तबला विभिन्न स्वरों में मिलाया जाता है, इसलिए इसमें गट्टों की बहुत आवश्यकता पड़ती है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

10.1 तबला के बाएं भाग को क्या जहते हैं?

1) चाँटी

2) लव

3) डग्गा

4) कोई नहीं

10.2 तबला के दायें भाग को क्या जहते हैं?

1) चाँटी

2) मदीन/चट्टू

3) गुडरी

4) कोई नहीं

10.3 इनमे से कौन सा तबला का अंग है?

1) तुम्बा

2) तबली

3) अट्टी

4) कोई नहीं

10.4 इनमे से कौन सा तबला का अंग है?

1) तुम्बा

2) खोल

3) अट्टी

4) कोई नहीं

10.5 इनमे से कौन सा तबला का अंग है?

1) तुम्बा

2) चिकारी

3) चाँटी

4) कोई नहीं

10.6 इनमे से कौन सा तबला का अंग है?

1) गुडरी

2) खूंटी

3) अट्टी

4) कोई नहीं

10.4 सारांश

तबला भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय और वाद्य यंत्र है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। तबला पर निरंतर अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है और यही तैयारी सुगम संगीत मे भी बहुत सहायक सिद्ध होती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे तबला पर अभ्यास से संगीतज्ञ के वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

10.5 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

10.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.1) उत्तर: 3

10.2) उत्तर: 2

10.3) उत्तर: 4

10.4) उत्तर: 2

10.5) उत्तर: 3

10.6) उत्तर: 1

10.7 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

10.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तबला वाद्य का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. तबला वाद्य का इतिहास लिखें।

प्रश्न 3 तबला वाद्य का संक्षिप्त परिचय और अंगों का विस्तार सहित वर्णन करें।

प्रश्न 4. तबला का वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

प्रश्न 5. तबला वाद्य के अंगों का विस्तार सहित वर्णन सचित्र करें।

इकाई-11
उस्ताद जाकिर हुसैन और तानसेन

इकाई की रूपरेखा

11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य
11.3	उस्ताद जाकिर हुसैन जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	तानसेन जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
11.5	सारांश
11.6	शब्दावली
11.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.8	संदर्भ
11.9	अनुशंसित पठन
11.10	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह ग्यारहवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, उस्ताद जाकिर हुसैन और तानसेन का जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

संसार की कोई भी विधा/संगीत क्यों न हो, जाब तक उसका इतिहास न जाना जाए, उस संगीत को जड़ से जानना असंभव सा प्रतीत होता है। इसी प्रकार संगीत की बारीकियों को समझने के लिए संगीत से जुड़े उन महान संगीतज्ञों के बारे मे अध्ययन करना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जिन्होंने अपना सर्वस्व संगीत के लिए न्योछावर कर दिया। उन महान संगीत गुनीजनों के जीवन का गूढ़ता से अध्ययन किया जाता है और उनके समय मे संगीत की स्थिति का और उनके द्वारा किए गए संगीत के उत्थान का अध्ययन किया जाता है। इन गुनीजनों के द्वारा रचित रचनाओं लेखों और रागों के अध्ययन से संगीत विषय मे निपुणता प्राप्त की जा सकती है। उन्हीं महान संगीतज्ञों मे से उस्ताद जाकिर हुसैन और तानसेन भी हैं। इनके जीवन का अध्ययन किसी भी संगीतज्ञ के लिए बहुत आवश्यक है। इनके जीवन परिचय से, इनके संगीत के प्रति समर्पण से कोई भी प्रेरित हुए बिना नहीं रह सकता अर्थात अनायास कि प्रेरित हो जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी उस्ताद जाकिर हुसैन और तानसेन के जीवन परिचय का विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे और इनके द्वारा सांगीतिक योगदान का अध्ययन कर प्रेरणा पा सकते हैं।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- उस्ताद जाकिर हुसैन के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।
- उस्ताद जाकिर हुसैन के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- उस्ताद जाकिर हुसैन के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- उस्ताद जाकिर हुसैन के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।
- तानसेन के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।

- तानसेन के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- तानसेन के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- तानसेन के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल उस्ताद जाकिर हुसैन और तानसेन के जीवन परिचय का अध्ययन कर परएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन और सांगीतिक यात्रा मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

11.3 उस्ताद जाकिर हुसैन

उस्ताद जाकिर हुसैन तबला वादक और संगीत क्षेत्र के अंतरराष्ट्रिय महारथी है। वे एक शास्त्रीय तबला वादक है। जो उत्कृष्ट तरीके से तबला बजाते है, बेहतर तरीके से तबला बजाने की उनकी इस कला ने उन्हें अपने देश भारत में ही नहीं बल्कि विश्व प्रसिद्धि दिलवाई, जब भी वे तबला बजाते थे तो उससे निकलने वाले संगीत और धुन से काफी अंतर्बोध होता था। वे पूरी निपुणता से अपना तात्कालिक प्रदर्शन करते हुए, अपने तबले की धुन से लोगो दिलो को छू जाते थे।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा:

जाकिर हुसैन का जन्म 9 मार्च 1951 को महान तबला वादक अल्लाह रखा के घर हुआ। 3 साल की आयु से ही उनके पिता उन्हें पखावज सिखाने लगे थे। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा सेंट माइकल हाई स्कूल, महिम से ग्रहण की और सेंट जेवियर कॉलेज, मुंबई से वे ग्रेजुएट हुए।

निजी जीवन:

जाकिर हुसैन का विवाह अन्टोनिया मिन्नेकोला के साथ हुआ, जो रक कत्थक नर्तकी और शिक्षिका थी, साथ ही वह जाकिर की मेनेजर भी थी। उन्हें दो बेटिया भी है, अनीसा कुरैशी और इसाबेला कुरैशी।

करियर:

1991 में जाकिर हुसैन का पहला प्लेनेट ड्रम एल्बम रिलीज़ किया गया था। जिसके लिए उन्हें 1992 में बेस्ट म्यूजिक एल्बम के लिए ग्रैमी अवार्ड भी मिला था। उस समय उनके क्षेत्र में यह पुरस्कार पाने वाले वह पहले भारतीय थे। ग्लोबल ड्रम प्रोजेक्ट एल्बम ने उस समय वैश्विक स्तर पर 8 फेब्रुअरी 2009 को 51 वे ग्रैमी अवार्ड्स सेरेमनी में ग्रैमी अवार्ड भी जीता था। मलयालम फिल्म वनाप्रस्थं के लिए उन्होंने एक संगीतकार, कार्यकर्ता और भारतीय संगीत सलाहकार के रूप में भी काम किया था। 1999 के ए.एफ.आई लॉस एंजिल्स अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में इस फिल्म का ग्रैंड जूरी पुरस्कार के लिए नामनिर्देशन भी किया गया था। मुंबई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल और 2000 में ही नेशनल फिल्म अवार्ड्स भी उन्होंने जीते। बहोत सी फिल्मो के लिये उन्होंने संगीत दिया है। सिर्फ इतना ही नहीं, यहाँ तक की उनकी तबले की धुन का प्रयोग लिटिल बुद्धा जैसी दुसरी कई फिल्मो मे भी किया गया है। जाकिर हुसैन बिल लास्वेल के "वर्ल्ड म्यूजिक सुपरग्रूप" के तबला विज्ञान के सदस्य भी है।

पुरस्कार और सन्मान:

1988 उन्हें 'पद्म श्री' का पुरस्कार मिला था। 2002 में संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें 'पद्म भूषण' का पुरस्कार दिया गया। 1992 और 2009 में संगीत का सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार 'ग्रैमी अवार्ड' भी मिला है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

11.1 उस्ताद जाकिर हुसैन का जन्म कब हुआ?

1) 11 मार्च 1951

2) 9 मार्च 1953

3) 9 मार्च 1951

4) कोई नहीं

11.2 उस्ताद जाकिर हुसैन के पिता का नाम क्या था?

1) अल्लारक्खा

2) मेहंदी हसन

3) शाहिद परेवज

4) कोई नहीं

11.3 जाकिर को कब बेस्ट म्यूजिक एल्बम के लिए ग्रैमी अवार्ड भी मिला था?

1) 1992

2) 1993

3) 1987

4) कोई नहीं

11.4 जाकिर को पद्मश्री अवार्ड मिला था?

1) 1992

2) 1988

3) 1987

4) कोई नहीं

11.5 जाकिर को पद्म भूषण अवार्ड मिला था?

1) 1992

2) 1993

3) 2002

4) कोई नहीं

11.4 तानसेन परिचय

'आइने अकबरी' में अबुल फजुल ने तानसेन के विषय में लिखा है कि ऐसा महान गायक पिछले एक हजार वर्षों में नहीं हुआ। यह कथन पूर्णतया सत्य मालूम पड़ता है। भारत का कौन ऐसा व्यक्ति होगा जिसने तानसेन का नाम न सुना हो। संगीत-जगत क्या, साधारण व्यक्ति भी उनके नाम से परिचित है।

तानसेन का असली नाम तन्ना मिश्र था और पिता का नाम मकरंद पांडे । कुछ लोग पांडे जी को मिश्र भी कहते थे। उनकी जन्म तिथि के विषय में अनेक मत हैं। अधिकांश विद्वानों के मतानुसार उनका जन्म 1532 १५३२ ई० में

ग्वालियर से सात मील दूर बेहट ग्राम में हुआ। कुछ विद्वान सन् १५०६ तथा कुछ १५२० मानते हैं। कुछ भी हो, उनका जन्म-काल सोलहवी शताब्दी का पूर्वार्ध सर्वसम्मति से एक है, उनके जन्म के विषय में यह किवदन्ती है कि बहुत दिनों तक मकरंद पांडे संतान-हीन थे । अतः वे बहुत चिन्तित रहा करते थे। किसी ने उनसे फकीर गौस से मिलने के लिये कहा। वे झट ग्वालियर जा पहुँचे । उनके आशिर्वाद स्वरूप उन्हें एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ, जिसे तन्ना के नाम से पुकारा गया। अपने पिता की एक मात्र सन्तान होने के कारण उनका पालन- पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ। बाल्यावस्था में वे बड़े नटखट और उद्दन्डी रहे, केवल इधर-उधर घूमना और एकाग्रचित होकर कोई काम न करना। बचपन से उसमें दूसरों की नकल करने की अपूर्व क्षमता थी । बालक तन्ना पशु-पक्षियों तथा जानवरों की विभिन्न बोलियों की सच्ची नकल करता और नटखट प्रकृतिवश हिंसक पशुओं की बोली से लोगों को डरवाता था ।

एक बार स्वामी हरिदास अपनी मंडली के साथ पास के जंगल से गुज़र रहे थे । नटखट तन्ना एक पेड़ की आड़ में शेर की दहाड़ से उन्हें डरवाने लगा । साधु-मन्डली बहुत घबराई। थोड़ी देर के बाद उन दो-तीन शिष्यों द्वारा तानसेन सामने लाये गये । स्वामी जी उनकी प्राकृतिक प्रतिभा से अत्यधिक प्रभावित हुये। उन्होंने सोचा कि यह बालक भविष्य मे बहुत अच्छा संगीतज्ञ हो सकता है। अतः वे मकरन्द पांडे के पास तानसेन को माँगने के लिये जा पहुँचे । पांडे जी को शुरू में हिचक हुई किन्तु स्वामी जी के आश्वासन और आग्रह से तानसेन को दे दिया ।

तानसेन ने स्वामी हरिदास से दस वर्षों तक संगीत-शिक्षा प्राप्त की। अपने पिता को अस्वस्थता सुनकर तानसेन अपनी मातृ-भूमि ग्वालियर चले गये। कुछ दिनों के बाद उनका देहांत भी हो गया। कहा जाता है कि मरने के पूर्व उनके पिता ने तानसेन को समझाया कि ग्वालियर के फकीर मोहम्मद गौस के हम बहुत ऋणी हैं। उनकी आज्ञा की कभी भी अवहेलना न करना। अतः बाद में स्वामी हरिदास की आज्ञा से वे मुहम्मद गौस के पास रहने लगे। ग्वालियर की विधवा रानी मृग-नयनी की दासी हुसैनी की सुन्दरता और संगीत से तानसेन बहत प्रभा- वित थे । अतः रानी मृगनयनी ने हुसैनी से तानसेन की शादी कर दी । कहते हैं कि हुसैनी सारस्वत ब्राह्मण थी । उसका असली नाम प्रेम कुमारी था। बाद। में तानसेन के ४ पुत्र ह्ये, सुरतसेन, शरतसेन, तरगसेन, बिलास खाँ और सरस्वती नाम की एक पुत्री ।

जब तानसेन एक अच्छे गायक हो गये तो रीवाँ-नरेश रामचन्द्र ने उन्हें राज्य-गायक नियुक्त कर लिया। महाराज रामचन्द्र ने अकबर को प्रसन्न करने के लिये गायक तानसेन को उन्हें उपहार स्वरूप भेंट कर दिया । अकबर संगीत का महान् प्रेमी

था। वह उन्हें पाकर अत्यधिक प्रसन्न हुआ और अपने नवरत्नों में शामिल कर लिया। धीरे-धीरे अकबर तानसेन को बहुत मानने लगा, जिससे दरबार के अन्य गायक उससे जलने लगे। सभी गायकों ने अकबर बादशाह से प्रार्थना की कि तानसेन से दीपक राग सुना जाय और यह देखा जाय कि दीपक राग में कितना प्रभाव है, तानसेन के अतिरिक्त कोई दूसरा गायक इसे गा नहीं सकेगा। यह बात बादशाह के दिमाग में जम गई। तानसेन के लाख समझाने पर भी बादशाह अपनी जिद पर अड़े रहे और तानसेन को दीपक राग गाना हो पड़ा। गाते हीं गर्मी बढ़ने लगी ओर चारों ओर से मानों अग्नि की लपटें निकलने लगीं। श्रोतामण तो गर्मी के मारे भाग निकले, किन्तु तानसेन का शरीर प्रचन्ड गर्मी से जलने लगा। बाद में उसकी पुत्री सरस्वती ने मेघ राग गाकर अपने पिता की जीवन-रक्षा की ।

बैजूबावरा तानसेन का समकालोन था। कहा जाता है कि एक बार दोनों में प्रतियोगिता हुई और तानसेन की हार हुई। इसके पूर्व तानसेन ने यह घोषणा करा दी थी कि राज्य में जो भी व्यक्ति गायेगा, तानसेन के साथ उसकी प्रतियोगिता होगी। जो हारेगा, उसे उसी समय मृत्यु स्वीकार करनी पड़ेगी। इस तरह तानसेन की वजह से अनेक गायकों की मृत्यु हुई, क्योंकि कोई गायक उसे हरा नहीं सका। अन्त में बैजूबावरा ने उसे परास्त किया, किन्तु बैजूबावरा ने उसे क्षमा कर विशाल हृदय का परिचय दिया ।

तानसेन ने अनेक रागों की रचना की जैसे- दरबारी कांहड़ा, मियाँ की सारंग, मियाँ मल्हार आदि। कहा जाता है कि तानसेन ने बाद में मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया। कुछ विद्वानों का कहना है कि गुलाम गौस की आज्ञा से वे मुसलमान हो गये और कुछ का कहना है कि अकबर की पुत्री से उसकी शादी हुई थी, इसलिये उसने मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया था। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि तान- सेन मुसलमान हुये ही नहीं। उसने फकीर गुलाम गौस की स्मृति में नवीन रागों के नाम के आगे मियाँ शब्द जोड़ दिया जैसे- मियाँ मल्हार आदि । सन् 1589 ई० में दिल्ली में तानसेन की मृत्यु हुई और ग्वालियर में गुलाम गोस की कब्र के पास उसकी समाधि बनाई गई। ग्वालियर में प्रतिवर्ष उसकी स्मृति में 'तानसेन समारोह' के अन्तर्गत संगीत के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

11.6 तानसेन का बचपन का नाम क्या था?

1) तन्नामिश्र

2) अल्लाह रक्खा

3) अहमद जान थिरकवा

4) हरीदास

11.7 तानसेन का के पिता का नाम क्या था?

1) तन्नामिश्र

2) अल्लाह रक्खा

3) मकरंद पांडे

4) हरीदास

11.8 बिलासखान तानसेन का क्या था?

1) पिता

2) शिष्य

3) नौकर

4) बेटा

11.9 तानसेन ने कौन से राग की रचना की?

1) भूपाली

2) दरबारी कान्हड़ा

3) यमन

4) देस

11.10 तानसेन ने कौन से राग की रचना की?

1) भूपाली

2) यमन

3) मियां मल्हार

4) देस

11.5 सारांश

उस्ताद जाकिर हुसैन और तानसेन भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इनके जीवन परिचय के अध्ययन से इनके द्वारा रचित रचनाओं और कृतियों को समझने और जानने का अवसर मिलता है, जो किसी भी संगीत रसिक के सांगीतिक जीवन के लिए सोने पर सुहागे वाली बात हो जाती है। इनके जीवन परिचय के अध्ययन से शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक और रचनात्मक पक्ष मे मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे संगीतज्ञ के गायन वादन और सांगीतिक सफर मे प्रेरणा, रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

11.6 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।

- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- सितार (Sitar): भारतीय शास्त्रीय संगीत का ऐसा तंत्री वाद्य यंत्र जो आज किसी भी परिचय का मोहताज नहीं रह गया है।

11.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

11.1) उत्तर: 3

11.2) उत्तर: 1

11.3) उत्तर: 1

11.4) उत्तर: 2

11.5) उत्तर: 2

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

11.6 उत्तर: 1

11.7 उत्तर: 3

11.8 उत्तर: 4

11.9 उत्तर: 2

11.10 उत्तर: 3

11.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

11.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.10 पाठगत प्रश्न

उस्ताद जाकिर हुसैन

प्रश्न 1. उस्ताद जाकिर हुसैन का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. उस्ताद जाकिर हुसैन का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. उस्ताद जाकिर हुसैन का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4 उस्ताद जाकिर हुसैन द्वारा रचित रचनाओं का विस्तार सहित वर्णन करें।

तानसेन

प्रश्न 1. तानसेन का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. तानसेन का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. तानसेन का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4 तानसेन द्वारा रचित रचनाओं एवं कृतियों का विस्तार सहित वर्णन करें।

इकाई-12
संगीत और स्वर

इकाई की रूपरेखा

12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य
12.3	संगीत परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	स्वर परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
12.5	सारांश
12.6	शब्दावली
12.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.8	संदर्भ
12.9	अनुशंसित पठन
12.10	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह बारहवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, संगीत और स्वर का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है। साथ ही स्वर के प्रकारों का विस्तृत अध्ययन एवं वर्णन किया गया है।

संगीत को समझने के लिए संगीत के इतिहास को जानना बहुत आवश्यक है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत विधाओं का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों ख्यालों और ध्रुपद तराना आदि को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। इन में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए स्वरों का अभ्यास किया जाता है। स्वरों के अभ्यास से गायक की आवाज मे परिपक्क्वता और वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है। इसी कड़ी को जारी रखते हुए कलाकार को संगीत के ऐतिहासिक पक्ष और स्वरों की आधारभूत जानकारी का भी ज्ञान होना चाहिए।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी संगीत और स्वर का अर्थ परिभाषा एवं विस्तृत रूप को समझ पायेगे और साथ ही स्वरों के विभिन्न प्रकारों का भी गूढ़ता से अध्ययन कर पाएंगे। की जिससे राग मे लगने वालों स्वरों के अनुसार अभ्यास कर सकेंगे।

12.2 उद्देश्य

राग विषय इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- संगीत विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- संगीत की परिभाषाओं के गहन अर्थ को समझ सकेंगे।
- संगीत के ऐतिहासिक पक्ष को समझ पाएंगे। ।
- संगीत के वर्तमान स्वरूप को जान सकेंगे।
- स्वर की परिभाषा को जान पाएंगे।
- स्वर का अर्थ समझ पाएंगे।

- स्वर के विभिन्न प्रकारों एवं रूपों को समझ पाएंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल संगीत और स्वर के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

12.3 संगीत परिचय

संगीत-कला की उत्पत्ति कब और कैसे हुई, इस विषय पर विद्वानों के विभिन्न मत हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख इस प्रकार है:-

a) संगीत की उत्पत्ति सृष्टि के साथ हुई। संगीत की उत्पत्ति आरम्भ में वेदों के निर्माता ब्रह्मा द्वारा हुई। ब्रह्मा ने यह कला शिव को दी और शिव के द्वारा सरस्वती को प्राप्त हुई। सरस्वती को इसी लिए 'वीणा-पुस्तक-धारिणी' कहकर संगीत और साहित्य की अधिष्ठात्री माना गया है। सरस्वती से संगीत-कला का जान नारद को प्राप्त हुआ। नारद ने स्वर्ग के गंधर्व, किन्नर तथा अप्सराओं को संगीत-शिक्षा दी। वहाँ से ही भरत, नारद और हनुमान आदि ऋषि संगीत-कला में पारंगत होकर भू-लोक (पृथ्वी) पर संगीत कला के प्रचारार्थ अवतीर्ण हुए।

b) धार्मिक मतानुसार, नारद ने अनेक वर्षों तक योग-साधना की तब शिव ने उन्हें प्रसन्न होकर संगीत-कला प्रदान की। पार्वती की शयनमुद्रा को देखकर शिव ने उनके अंग-प्रत्यंगों के आधार पर रुद्रवीणा बनाई और अपने पाँच मुखों से पाँच रागों की उत्पत्ति की। तत्पश्चात् छठा राग पार्वती के मुख द्वारा उत्पन्न हुआ। शिव के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और आकाशोन्मुख होने से क्रमशः भैरव, हिंडोल, मेघ, दीपक और श्री राग प्रकट हुए तथा पार्वती द्वारा कौशिक राग की उत्पत्ति हुई। 'शिवप्रदोष' स्तोत्र में लिखा है कि त्रिजगत् की जननी गौरी को स्वर्ण-सिहासन पर बैठाकर प्रदोष के समय शूलपाणि शिव ने नृत करने की इच्छा प्रकट की। इस अवसर पर सब देवता उन्हें घेरकर खड़े हो गए और उनका स्तुति-गान करने लगे। सरस्वती ने वीणा, इन्द्र तथा ब्रह्मा ने करताल बजाना आरंभ किया, लक्ष्मी गाने लगीं और विष्णु भगवान् मृदंग बजाने लगे। इस नृत्यमय संगीतोत्सव को देखने के लिए गंधर्व, यक्ष, पतग, उरग, सिद्ध, साध्य, विद्याधर, देवता, अप्सराएँ आदि सब उपस्थित थे।

c) 'संगीत-दर्पण' के लेखक दामोदर पंडित (सन् १६२५ ई०) के मतानुसार, संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा से ही हुई। अपने मत की पुष्टि करते हुए उन्होंने लिखा हैः

द्रुहिणेत यक्षविंष्टम प्रयुक्त भरतेन च।

महादेवस्य पुरतस्तन्मार्गाख्या विमुक्तदम्।।

अर्थात् - ब्रह्मा (द्रुहिण) ने जिस संगीत को शोधकर निकाला, भरत मुनि ने महादेव के सामने जिसका प्रयोग किया तथा जो मुक्तिदायक है, वह 'मार्गी' संगीत कहलाता है।

d) कुछ संगीतज्ञों ने संगीत की उत्पत्ति पशु, पक्षियों द्वारा बताई गई है जो निम्न है-

मोर से षड्ज, चातक से ऋषभ, बकरा से गांधार, कौआ से मध्यम, कोयल से पंचम, मेढक से धैवत और हाथी से निषाद स्वर की उत्पत्ति हुई।

e) फ़ारसी के एक विद्वान का मत है कि हजरत मूसा जब पहाड़ों पर घूम- घूमकर वहाँ की छटा देख रहे थे, उसी वक्त रौब से एक आवाज आई (आकाश- वाणी हुई) कि 'या मूसा हक्क़ीक़ी, तू अपना असा (एक प्रकार का डंडा, जो फ़कीरों के पास होता है) इस पत्थर पर मार!' यह आवाज सुनकर हजरत मूसा ने अपना असा जोर से उस पत्थर पर मारा, तो पत्थर के सात टुकड़े हो गए और हर-एक टुकड़े में से पानी की धारा अलग-अलग बहने लगी। उसी जल-धारा की आवाज से हजरत मूसा ने सात स्वरों की रचना की, जिन्हें 'सा रे ग म प ध नि' कहते हैं।

f) एक अन्य फ़ारसी विद्वान का कथन है कि पहाड़ों पर 'मूसीकार' नाम का एक पक्षी होता है, जिसकी चोंच में बाँसुरी की भाँति सात सुराख होते हैं। उन्हीं सात सूराखों से सात स्वर ईजाद हुए।

g) पाश्चात्य विद्वान फायड के मतानुसार, संगीत की उत्पत्ति एक शिशु के समान, मनोविज्ञान के आधार पर हुई। जिस प्रकार बालक रोना, चिल्लाना, हँसना आदि क्रियाएँ आवश्यकतानुसार स्वयं सीख जाता है, उसी प्रकार मानव में संगीत का प्रादुर्भाव मनोविज्ञान के आधार पर स्वयं हुआ।

h) जेम्स लोंग के मतानुयायियों का भी यही कहना है कि पहले मनुष्य ने बोलना सीखा, चलना-फिरना सीखा और फिर शनैः शनैः क्रियाशील हो जाने पर उसके अन्दर संगीत स्वतः उत्पन्न हुआ।

संगीत की परिभाषा

संगीत ऐसी कला है जिसमें स्वर, लय और ताल के माध्यम से संगीतज्ञ अपने मन के भावों को दूसरों के समक्ष प्रकट करता है। भाव और रस को दूसरों के समक्ष व्यक्त करने में संगीत अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है। संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश है। सांगेट रत्नाकर ग्रंथ मे संगीत की परिभाषा निम्न श्लोक द्वारा दी गई है-

गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते।

नृत्यं वाद्यानुगं प्रोक्तं वाद्यं गीतानुवर्ति च।।

पंडित शारंगदेव ने अपने ग्रंथ संगीत रत्नाकर में संगीत शब्द की उत्पत्ति पर यथेष्ट प्रकाश डालने का प्रयास किया है। संगीत रत्नाकर का भाष्य रूपान्तरण करते हुए कल्लिनाथ ने संगीत शब्द से गायन, वादन और नृत्य तीनों का अर्थ गृहीत किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि गायन को तो संगीत कहते ही हैं किन्तु जहां केवल वादन या नृत्य का प्रदर्शन होता है वहां भी संगीत शब्द का प्रयोग किया जाता है। कल्लिनाथ के मतानुसार यदि संगीत का अर्थ केवल गायन से ही लिया गया होता तो उसे संगीत न कह कर केवल गीत ही कहा जाता-- **''गीतय इति गीतम्''**-अर्थात् जो गाया जाता है उसे गीत कहते हैं। इस प्रकार गायन शब्द का अर्थ प्रकट करने के लिए गीत शब्द ही पर्याप्त था, उसके लिए संगीत शब्द का प्रयोग क्यों करते लेकिन गीत शब्द के पहले 'सम्' उपसर्ग लगाकर उसे आचार्यों ने सर्वाधिक व्यापक बनाने का प्रयत्न किया है। संगीत शब्द का अर्थ है कि ''सम्यग रूपेण गीयते इति संगीतम्'' अर्थात् जो सब प्रकार से गाया जाए उसे ''संगीत'' कहते हैं। संगीत का यह अर्थ स्वीकार करने पर उसके अन्तर्गत गायन, वादन और नृत्य तीनों का समावेश हो जाता है।

वस्तुतः गायन, वादन तथा नृत्य इनमें से प्रत्येक में एक दूसरे का समावेश है। जिस प्रकार वादन के बिना गायन अधूरा है उसी प्रकार गायन और वादन के बिना नृत्य अधूरा है। अर्थात ये कहना गलत नहीं होगा कि एक तीनों (गायन, वादन और नृत्य) एक दूसरे के पूरक हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

12.1 संगीत क्या है?

1) गायन

2) वादन

3) नृत्य

4) गायन वादन

5) गायन वादन और नृत्य

12.2 संगीत और साहित्य की अधिष्ठात्री कौन सी देवी को माना गया है?

1) काली

2) दुर्गा

3) सरस्वती

4) कोई नहीं

12.3 संगीत की उत्पत्ति किससे हुई?

1) इन्द्र देव द्वारा

2) शिव द्वारा

3) कृष्ण द्वारा

4 वेदों के निर्माता ब्रह्मा द्वारा

12.4 स्वर परिचय

स्वर क्या है? इसका सांगीतिक सामान्य अर्थ है कि श्रुति के पश्चात् तुरन्त उत्पन्न होने वाली आवाज़ जो अनुकरणनात्मक हो 'स्वर' है। शांरगदेव कहते हैं:-

"सुनने के बाद जो स्निग्ध अनुकरणीय है

जो सुनने वाले को स्वत: संतुष्ट कर दे उसे स्वर कहते हैं।

अर्थात् श्रुति के पश्चात् उत्पन्न होने वाला स्निग्ध, अनुरणात्मक, स्वयं रंजक नाद 'स्वर' कहलाता है। पश्चातवर्ती ग्रन्धकारों ने भी स्वर की परिभाषा उपरोक्त की भांति ही दी है। केवल शब्दों में थोड़ा बहुत भेद है परन्तु सभी का अर्थ एक ही है। जिससे स्वर के निम्नलिखित गुण सामने आते हैं:-

1. संगीतोपयोगी नाद हो।

2. आवाज़ स्थिर तथा गूंजदार हो।

3. अनुरणनात्मक नाद हो।

4. श्रुति के पश्चात् उत्पन्न हुआ हो।

5. चित्त का रंजन करने वाला हो।

6. जिसका दूसरे संगीतपयोगी नाद से विशिष्ट अन्तराल हो।

7. तेल की धार की भांति अटूट मधुर ध्वनि वाला हो।

स्वर में उपरोक्त सभी गुणों का समावेश होना आवश्यक है। एक सप्तक में 22 श्रुतियों पर 7 शुद्ध स्वरों की स्थापना की गई। विकृत स्वरों की संख्या में विद्वानों के मतभेद हैं। आधुनिक प्रचलित उत्तर भारतीय संगीत में 7 शुद्ध 5 विकृत स्वरों को स्थान प्राप्त है। 5 विकृत स्वरों मे से 4 स्वर कोमल और 1 तीव्र स्वर है। कोमल स्वरों के लिए स्वरों के नीचे सीधी रेखा है और तीव्र स्वर के लिए स्वर के ऊपर खड़ी रेखा है। प्राचीनकाल तथा मध्यकालीन ग्रंन्थकार, स्वर को उसकी अंतिम श्रुति पर स्थापित मानते हैं परन्तु भातखण्डे जो स्वर को उसकी पहली श्रुति पर मानते हैं। प्राचीन एवं मध्यकालीन ग्रंन्धकारों के अनुसार श्रुति पर स्वर स्थापना :-

श्रुति	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
				सा			रे		ग				म				प			ध		नि

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

12.4 हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत मे कुल (शुद्ध एवं विकृत) कितने स्वर हैं?

1) 10

2) 7

3) 12

4) कोई नहीं

12.5 कोमल स्वरों के लिए क्या चिन्ह है?

1) स्वरों के ऊपर खड़ी रेखा

2) स्वरों के नीचे सीधी रेखा

3) स्वरों के ऊपर तिरछी रेखा

4) कोई नहीं

12.6 तीव्र स्वरों के लिए क्या चिन्ह है?

1) स्वरों के ऊपर खड़ी रेखा

2) स्वरों के नीचे सीधी रेखा

3) स्वरों के ऊपर तिरछी रेखा

4) कोई नहीं

12.7 कोमल स्वर कौन सा है?

1) सा

2) म

3) ग

4) कोई नहीं

12.8 अचल स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) म

3) प

4) कोई नहीं

12.9 अचल स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) सा

3) म

4) कोई नहीं

12.5 सारांश

संगीत और स्वर भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। राग पर ही तो हिन्दुस्तानी शासतीय संगीत आधारित है। संगीत मे स्वरों के अभ्यास से अलंकारों के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। संगीत मे स्वरों के अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। रागों के अभ्यास से किसी भी प्रकार के संगीत को गाने बजाने मे समस्या नहीं होती। क्यूंकि शास्त्रीय संगीत, संगीत का आधार है। इसके बिना किसी भी अन्य संगीत मे पारंगत नहीं बना जा सकता।

12.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।

- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।
- जाति: रागों में लगने वाले स्वरों की विभिन्न संख्याओं के कारण उनमें जो अलग-अलग वर्ग किये गये हैं उन्हें रागों की जातियाँ कहते हैं।

12.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

12.1) उत्तर: 5

12.2) उत्तर: 3

12.3) उत्तर: 4

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

12.4) उत्तर: 3

12.5) उत्तर: 2

12.6) उत्तर: 1

12.7) उत्तर: 3

12.8) उत्तर: 3

12.9) उत्तर: 2

12.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

12.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

12.10 पाठगत प्रश्न
राग का अर्थ

प्रश्न 1. संगीत का परिचय संक्षिप्त लिखिए।

प्रश्न 2. संगीत का अर्थ परिभाषा संक्षेप मे लिखें।

प्रश्न 3. संगीत का अर्थ परिभाषा और ऐतिहासिक पक्ष को लिखें।

प्रश्न 4. वर्तमान संगीत के विभिन्न आयामों को लिखें।

प्रश्न 5. स्वर का अर्थ परिभाषा संक्षेप मे लिखें।

प्रश्न 6. स्वर का अर्थ परिभाषा एवं स्वरों के विभिन्न रूपों को संक्षेप मे लिखें।

इकाई-13
अल्हैया बिलावल, भैरव और काफी राग

इकाई की रूपरेखा

13.1	भूमिका
13.2	उद्देश्य
13.3	अल्हैया बिलावल परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
13.4	भैरव राग परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
13.5	काफी राग परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 3
13.6	सारांश
13.7	शब्दावली
13.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.9	संदर्भ
13.10	अनुशंसित पठन
13.11	पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA101 की यह तेरहवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में अल्हैया बिलावल,भैरव और काफी राग का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। रागों के वादी सवादी और अनुवादि स्वरों के साथ अगर सही न्याय किया जाए तो राग अनायास ही श्रोता को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। अल्हैया बिलावल,भैरव और काफी राग भी ऐसे ही मधुर राग है जिनके अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी इन रागों को समझ सकेगा और इनके अभ्यास से अपने क्रियात्मक पक्ष को उच्च स्तर पर निखार सकता है।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- अल्हैया बिलावल राग का अर्थ समझ सकेंगे।
- भैरव राग का अर्थ समझ सकेंगे।
- काफी राग का अर्थ समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल अल्हैया बिलावल,भैरव और काफी राग के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

13.3 राग अल्हैया बिलावल परिचय

राग अल्हैया बिलावल

राग- अल्हैया बिलावल

थाट- बिलावल

जाति- षाड़व

वादी- ध

संवादी- ग

स्वर- नि कोमल और नि शुद्ध और शेष स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर- आरोह मे म

न्यास- ग ध सां

समप्राकृतिक राग- बिलावल

आरोह- सा रे ग प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध नि ध प म ग रे सा

पकड़- ग रे ग प म ग ग प ध नि ध प

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

13.1 राग अल्हैया बिलावल का वादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

13. राग अल्हैया बिलावल का संवादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

13.3 राग अल्हैया बिलावल की जाति क्या है?

1) सम्पूर्ण - सम्पूर्ण

2) सम्पूर्ण- षाड़व

3) षाड़व- सम्पूर्ण

4) कोई नहीं

13.4 राग अल्हैया बिलावल का समप्राकृतिक राग कौन सा है?

1) भैरव

2) बिलावल

3) देश

4) कोई नहीं

13.5 राग अल्हैया बिलावल का थाट कौन सा है?

1) भैरव

2) बिलावल

3) आसावरी

4) कोई नहीं

13.4 राग भैरव परिचय

राग भैरव

राग- भैरव

थाट- भैरव

जाति- सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

वादी- ध

संवादी- रे

स्वर- रे ध कोमल और शेष स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर- .....

न्यास- सा रे ध प

समप्राकृतिक राग- कलिंगड़ा

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा

पकड़- ग म ध ऽ प, म प ग रे ऽ रे सा

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6 राग भैरव का वादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

7 राग भैरव का संवादी स्वर कौन सा है ?

1) रे

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

8 राग भैरव की जाति क्या है?

1) सम्पूर्ण - सम्पूर्ण

2) सम्पूर्ण- षाड़व

3) षाड़व- सम्पूर्ण

4) कोई नहीं

9 राग भैरव का समप्राकृतिक राग कौन सा है?

1) भैरव

2) कलिंगड़ा

3) देश

4) कोई नहीं

10 राग भैरव का थाट कौन सा है?

1) आसावरी

2) बिलावल

3) भैरव

4) कोई नहीं

13.5 राग काफी परिचय

राग काफी

राग- काफी

थाट- काफी

जाति- सम्पूर्ण

वादी- प

संवादी- रे

स्वर- ग नि कोमल शेष शुद्ध

वर्जित स्वर- .....

न्यास- प रे सा।

समप्राकृतिक राग- .....

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा

पकड़- सा सा रे रे ग ग म म प ऽ

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

13.11 राग काफी का वादी स्वर कौन सा है ?

1) प

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

13.12 राग काफी का संवादी स्वर कौन सा है ?

1) प

2) ध

3) रे

4) कोई नहीं

13.13 राग काफी की जाति क्या है?

1) सम्पूर्ण - सम्पूर्ण

2) सम्पूर्ण- षाड़व

3) षाड़व- सम्पूर्ण

4) कोई नहीं

13.14 राग काफी का समप्राकृतिक राग कौन सा है?

1) भैरव

2) कलिंगड़ा

3) देश

4) कोई नहीं

13.15 राग काफी का थाट कौन सा है?

1) आसावरी

2) बिलावल

3) काफी

4) कोई नहीं

13.6 सारांश

अल्हैया बिलावल,भैरव और काफी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ताल के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे ताल अल्हैया बिलावल,भैरव और काफी राग अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

13.7 शब्दावली

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।

- लय (Lay): संगीत के समान गति को लय कहते हैं, संगीत में लय अत्यंत महत्पूर्ण हैं, लय के बिना संगीत की कल्पना भी करना असंभव हैं।
- मात्रा (Matra): ताल की इकाई को मात्रा कहते हैं।
- ताली (Taali): सम के अलावा अन्य विभागों की पहली मात्रा पर जहाँ हथेली पर दुसरे हाथ की हथेली के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ताली कहते हैं।
- खाली (Khali): ताल देते समय जहाँ विभाग की प्रथम मात्र पर ध्वनि न करके केवल हाथ हिलाकर इशारा कर देते हैं, उसे 'खाली' कहते हैं. अधिकतर खाली ताल के बीच की मात्र अथवा उसके आस पास हीं कहीं पड़ती है।
- विभाग (Vibhag): ताल को कुछ निश्चित मात्राओं में बांटना जिससे भरे एवं खाली जगहों का पता लगे उसे विभाग कहते हैं

13.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

13.1) उत्तर : 2

13.2) उत्तर: 1

13.3) उत्तर: 3

13.4) उत्तर: 2

13.5) उत्तर: 2

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

13.6) उत्तर : 2

13.7) उत्तर: 1

13.8) उत्तर: 1

13.9) उत्तर: 2

13.10) उत्तर: 3

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 3

13.11) उत्तर: 1

13.12) उत्तर: 3

13.13) उत्तर: 1

13.14) उत्तर: 4

13.15) उत्तर: 3

13.9 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2002). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

13.10 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

13.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. अल्हैया बिलावल राग का संक्षिप्त परिचय लिखें।

प्रश्न 2. भैरव राग का संक्षिप्त परिचय लिखे।

प्रश्न 3 काफी राग का संक्षिप्त परिचय लिखें।

प्रश्न 4. अल्हैया बिलावल,भैरव और काफी राग के संक्षिप्त परिचय लिखें।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न कार्यभार

प्रश्न 1. आमिर खान और उस्ताद शाहिद परवेज़ खाँ का जीवन परिचय और इनके द्वारा रचित रचनाओं एवं कृतियों का विस्तार सहित वर्णन करें।

प्रश्न 2. राग की जाति का अर्थ एवं प्रमुख जातियों का वर्णन करें।।

प्रश्न 3. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 4. सप्तक का विस्तृत परिचय और सप्तक के प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 5. लय का विस्तृत परिचय और लय के प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 6. सितार वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार सहित वर्णन करें।

प्रश्न 7. तानपूरा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का सचित्र वर्णन करें।

प्रश्न 8. नाद का अर्थ परिभाषा और इसके भेदों तथा प्रकारों के नाम विस्तार सहित लिखें।

प्रश्न 9. हारमोनियम का वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

प्रश्न 10. तबला का वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

प्रश्न 11. तानसेन और जाकिर हुसैन का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 12. संगीत का अर्थ परिभाषा और ऐतिहासिक पक्ष तथा स्वर विषय पर विस्तार से प्रकाश डालें।

प्रश्न 13. अल्हैया बिलावल,भैरव और काफी राग के संक्षिप्त परिचय लिखें।